 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

कार्तिक-मार्गशीर्ष, संवत् नानकशाही ५४६
वर्ष ८ अंक ३ नवंबर 2014

संपादक : सिमरजीत सिंह
सहायक संपादक : जगजीत सिंह

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304



फैक्स: 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

हरि की गति नहि कोऊ जानै ॥
जोगी जती तपी पचि हारे अरु बहु लोग सिआने ॥१॥ रहाउ ॥
छिन महि राउ रंक कउ करई राउ रंक करि डारे ॥
रीते भरे भरे सखनावै यह ता को बिवहारे ॥१॥
अपनी माइआ आपि पसारी आपहि देखनहारा ॥
नाना रूपु धरे बहु रंगी सभ ते रहै निआरा ॥२॥
अगनत अपारु अलख निरंजन जिह सभ जगु भरमाइओ ॥
सगल भरम तजि नानक प्राणी चरनि ताहि चितु लाइओ ॥३॥ *(पन्ना ५३७)*

बिहागड़ा राग में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद में नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब फरमान कर रहे हैं कि इस दुनिया में अनेकों योगी, जती, तपी आदि बहुत-से समझदार कहे जाने वाले लोग हुए हैं। वे सब परमात्मा की वास्तविकता के बारे में, उसकी सत्यता के बारे में जाने बिना थक-हार गए हैं, मगर कोई भी परमात्मा के बारे में नहीं जान पाया कि वो कैसा है। परमात्मा ऐसा है कि वो एक क्षण में कंगाल को राजा बना देता है और क्षण भर में राजा को कंगाल कर देता है। परमात्मा ऐसा है कि वो खाली बर्तनों को भर देता है तथा भरे हुए बर्तनों को खाली कर देता है अर्थात् गरीबों को अमीर तथा अमीरों को गरीब कर देता है। यह उसका रोज का व्यवहार है, काम है।

अगली पंक्तियों में गुरु जी का फरमान है कि यह जो जगत है, यह जो जगत-माया है, यह सब परमात्मा का खुद का प्रसार है, किया-कराया है और इस जगत-माया की संभाल, देखरेख भी वो खुद ही कर रहा है। परमात्मा बहुरंगी है। वो अनेक रूपों में विद्यमान है तथा सबसे न्यारा है। परमात्मा के गुणों को गिना नहीं जा सकता। उसकी महिमा अपार है। वो अलख अर्थात् अलक्ष्य, अगोचर है। वो निरंजन है अर्थात् दोष-रहित है। परमात्मा ने सारे जगत को माया के जाल में भ्रमाया हुआ है।

अंतिम पंक्ति में गुरु जी उपदेश दे रहे हैं कि जिस प्राणी ने जगत-माया की सारी भटकनाओं से खुद को दूर रखा है, जो माया के जंजाल में फंसा नहीं है, वही परमात्मा के चरणों में चित्त को जोड़ सका है, वही परमात्मा को जान सका है, वही परमात्मा की वास्तविकता पता कर सका है; वही परमात्मा को पाने का हकदार बन सका है। कहने से तात्पर्य कि परमात्मा को जानना और जानकर पाना आसान काम नहीं है। इस संसार की माया में रहते हुए भी, इस समाज का अभिन्न अंग बनकर भी जिस जीव ने परमात्मा के प्रति मोह बनाए रखा है उसी का इस संसार में आना सफल हुआ है।





श्री गुरु नानक देव जी की सिक्खों को प्रेरणा

सिक्ख धर्म के प्रवर्त्तक साहिब श्री गुरु नानक देव जी का जन्म पापों के अंधकार में जल रही जनसाधारण के लिए जगमग करता हुआ प्रकाश था। श्री गुरु नानक देव जी ने बाल्यावस्था में ही जनमानस को रमज़ों से समझाना शुरू कर दिया था ताकि वो छल-कपट आदि के भ्रम से भरी ज़िंदगी को समझकर सत्य के मार्ग के पथिक बन सकें। जब आप जी को पांधे के पास पढ़ने के लिए भेजा गया तो आपने पांधे से सांसारिक एवं आध्यात्मिक विद्या की प्राप्ति के कारणों एवं प्रयोजनों को भांपते हुए महसूस किया कि तत्कालीन विद्या मनुष्य के लिए कल्याणकारी नहीं है। श्री गुरु नानक देव जी ने किरत की महत्ता को समझते हुए प्रत्येक मनुष्य के लिए किरत करना उतना की आवश्यक माना जितना कि ज़िंदा रहने के लिए सांस लेना आवश्यक है। गुरु जी ने किरत को अपने जीवन में बहुत ही जिम्मेदारी के साथ निभाया-- भैंसें चराईं, व्यापार किया, नौकरी की तथा अपने हाथों से खेती की। व्यापार करते हुए गुरु जी ने इस बात को महसूस किया कि निजी लाभ हेतु किया गया व्यापार आदर्श व्यापार नहीं हो सकता बल्कि अपनी नेक कमाई में से दसवंध निकालकर ज़रूरतमंदों को कुछ देना, भूखों को भोजन खिलाना, मुसीबतमारों को वस्त्र आदि प्रदान करने से कमाई सच्ची-सुच्ची होती है। श्री गुरु नानक देव जी ने सुलतानपुर लोधी में नौकरी करते हुए अपने हाथों से नेक कमाई में से ज़रूरतमंदों की ज़रूरतें पूरी करके दुनिया के समक्ष विलक्षण उदाहरण पेश की।

श्री गुरु नानक देव जी ने गृहस्थ धर्म की महानता को समझते हुए खुद गृहस्थ धर्म में प्रवेश किया। गुरु जी ने सिक्खों को सिर्फ घर-परिवार के दायरे तक ही सीमित रह जाना प्रवान नहीं किया। गुरु जी ने गृहस्थी को संसार-कल्याण एवं सरबत्त का भला करने का उपदेश भी दिया।

पूरी मानवता को सच का उपदेश देकर उसे झूठ के विरुद्ध लामबंद करना गुरु जी के समक्ष एक बड़ा कार्य था। गुरु जी ने इस कार्य की पूर्ति हेतु अपने सभी सुख-आराम त्यागकर बड़ी-बड़ी प्रचार-यात्राएं कीं। अपनी सांसारिक यात्रा का बड़ा हिस्सा उन्होंने इस कार्य के लिए समर्पित किया। श्री गुरु नानक देव जी ने जहां धर्मोपदेश से लाखों लोगों को निहाल किया वहीं साथ ही अपनी बाणी द्वारा लाखों लोगों को सत्य के मार्ग के पथिक भी बनाया। बड़े-बड़े विद्वानों के साथ विचार-गोष्ठियां करके उनका रवैया बदलकर उन्हें लोगों की भलाई हेतु कार्यशील किया।

गुरु जी इस बात के पक्के धारणी थे कि धर्म का मूल रूप लोगों की सेवा है। गुरु जी ने उस समय के पंडितों, सिद्धों, नाथों, योगियों, मौलवियों, काजियों, पीरों, वलियों, औलियों आदि से संवाद रचाकर समझाया कि ये आम लोग ही आपकी शारीरिक एवं मानसिक ज़रूरतों की पूर्ति करते हैं। इसके बदले में आपको भी इन लोगों को आध्यात्मिक मंज़िल का सही

रास्ता बताना चाहिए।

श्री गुरु नानक देव जी की बाणी इतनी प्रभावशाली है कि उनके संपर्क में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति सत्य के मार्ग का पथिक बन जाता है। गुरु जी ने बाणी के व्याख्यान द्वारा भूले-भटकों, कातिलों, चोरों, डाकुओं, जादूगरनियों, आदमखोरों आदि के जीवन को बदलकर उनको जनमानस की भलाई हेतु लगा दिया। ये सारे गुरु जी की शिक्षाओं एवं दर्शन-- नाम जपो, किरत करो एवं वंड छको (बांटकर खाओ) के धारणी बनकर अपना जीवन सफल कर गए।

आज फिर हम दुखों, कष्टों आदि में फंसते जा रहे हैं, जिसका मुख्य कारण गुरु नानक साहिब द्वारा प्राप्त शिक्षाओं पर अमल न करना है। हमें नानक नाम-लेवा सिक्खों को अपने मौजूदा जीवन, आचरण तथा कार्यों का मूल्यांकन करना चाहिए कि क्या हम गुरु साहिब के बताए गए मार्ग पर चल रहे हैं। हम गुरमति के मार्ग से कहीं भटक तो नहीं गए? ऐसा लेखा-जोखा हमें मौजूदा घोर दुखों-कष्टों के चक्रव्यूह में से निकालने में सहाई हो सकता है। हम अगर गुरु जी की खुशियां प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें आत्म-कल्याण तथा विश्व-कल्याण के लिए अपना बनता योगदान डालना ही पड़ेगा। हमें अपने स्वयं-सृजित दुखों-कष्टों की पहचानकर उनका त्याग करना पड़ेगा। गुरु जी के जीवन तथा पावन बाणी से दिशा लेकर सात्विक संकल्पों तथा इरादों को जीवन में धारण कर हम गुरु साहिब की खुशियां प्राप्त कर सकते हैं। 

सतिगुरु नानक प्रगटिआ मिटी धुंधु जगि चानणु होआ।
जिउ करि सूरजु निकलिआ तारे छपि अंधेरु पलोआ।
सिंघु बुके मिरगावली भंनी जाइ न धीरि धरोआ।
जिथे बाबा पैरु धरि पूजा आसणु थापणि सोआ।
सिधासणि सभि जगति दे नानक आदि मते जे कोआ।
घरि घरि अंदरि धरमसाल होवै कीरतनु सदा विसोआ।
बाबे तारे चारि चकि नउ खंडि प्रिथवी सचा ढोआ।
गुरमखि कलि विचि परगटु होआ ॥२७॥१॥

(वार, भाई गुरदास जी)

श्री गुरु नानक देव जी की बाणी में कर्मकांड तथा पाखंड का निषेध

*-डॉ. परमजीत कौर**

वहम, भ्रम, झूठ, पाखंड, पराधीनता तथा अज्ञान के अंधकारपूर्ण संकीर्ण जीवन-पथ का बोध करवाकर सत्य के प्रकाश रूपी मार्ग को दिखाने वाले, अज्ञान का नाश कर हृदय में प्रेम की ज्योति जगाने वाले, शांति के पुंज, विनम्रता की मूर्ति श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी बाणी में पाखंड तथा कर्मकांड का विशेष रूप से खंडन किया है। श्री गुरु नानक देव जी ने लोगों को सदा एक परमात्मा की आराधना करने का आदेश तथा उपदेश दिया है :

साहिबु मेरा एको है ॥
एको है भाई एको है ॥ (पन्ना ३५०)

किसी अन्य देवी-देवता की पूजा करना, मढ़ी-मसाणों पर जाना जीवन के अमूल्य समय को व्यर्थ गंवाना है। गुरु जी का आदेश है :

-दुबिधा न पड़उ हरि बिनु होरु न पूजउ मड़ै मसाणि न जाई ॥ (पन्ना ६३४)

-जिनि जीउ पिंडु दिता तिसु चेतहि नाहि ॥
मड़ी मसाणी मूड़े जोगु नाहि ॥ (पन्ना ११९०)

-देवी देवा पूजीऐ भाई किआ मागउ किआ देहि ॥
पाहणु नीरि पखालीऐ भाई जल महि बूडहि तेहि ॥ (पन्ना ६३७)

श्री गुरु नानक देव जी समझाते हैं कि प्रभु के बिना किसी अन्य आश्रय की झांक दुर्मति है जिसके अधीन जीव का शरीर काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकारों में ग्रसित रहता है :

दूजी दुरमति अंनी बोली ॥
काम क्रोध की कची चोली ॥
घरि वरु सहजु न जाणै छोहरि बिनु पिर नीद न पाई हे ॥ (पन्ना १०२२)

जीव सदा अशांत तथा दुखी रहता है :

गणत गणीऐ सहसा जीऐ ॥
किउ सुखु पावै दूऐ तीऐ ॥
निरमलु एकु निरंजनु दाता गुर पूरे ते पति पाई हे ॥ (पन्ना १०२३)

जीव का परमात्मा के साथ बहुत नज़दीक का सम्बंध है। हमारी कोई भी क्रिया उसके हुक्म से बाहर नहीं है :

-नेड़ा है दूरि न जाणिअहु नित सारे संम्हाले ॥
जो देवै सो खावणा कहु नानक साचा हे ॥ (पन्ना ४८९)

-हुकमु चलाइ रहिआ भरपूरे ॥
किसु नेड़ै किसु आखां दूरे ॥ (पन्ना १०४२)

जिस मनुष्य के अंदर छल-कपट है, जिसकी दृष्टि पाखंड वाली है, जो नाम-सिमरन नहीं करता, जिसके अंदर गुणों का अभाव है, उसके लिये परमात्मा समीप होते हुए भी दूर है।

श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार जो मनुष्य परमात्मा का नाम ताबीज़ तथा यंत्र आदि के रूप में बेचते हैं उनका जीवन धिक्कार योग्य है। वे स्वयं बंदगी के राह से भटके हुए हैं। ऐसे में वे दूसरों का कल्याण नहीं कर सकते :

ध्रिगु तिना का जीविआ जि लिखि लिखि वेचहि नाउ ॥
खेती जिन की उजड़ै खलवाड़े किआ थाउ ॥ (पन्ना १२४५)

गुरु के सिक्ख के लिये प्रभु का नाम ही सब कुछ है। श्री गुरु नानक देव जी विस्तार

**६२०, गली नं. २, छोटी लाइन, संतपुरा, यमुनानगर-१३५००१ (हरियाणा); फोन: ०१७३२२२४९८८*

से समझाते हैं कि परमात्मा सर्वव्यापक है। मुझे कोई अन्य परमात्मा जैसा दिखाई ही नहीं देता जिसकी मैं पूजा करूं। परमात्मा का नाम जपो यही असली पूजा है। गुरु का शबद अंदर बसाओ, समझ आ जायेगी कि परमात्मा के बिना अन्य कोई नहीं जिसकी पूजा की जाए :

राम नामु जपि अंतरि पूजा ॥
गुर सबदु वीचारि अवरु नही दूजा ॥
एको रवि रहिआ सभ ठाई ॥
अवरु न दीसै किसु पूज चड़ाई ॥ (पन्ना १३४५)

वहम-भ्रम, शगुन-अपशगुन, दिन-मुहूर्त, जंत्र-मंत्र, धागे-ताबीज़ आदि में विश्वास अज्ञानता के उस अंधकारपूर्ण मार्ग की ओर ले जाता है जो परमात्मा तक नहीं पहुंचाता :

साहा गणहि न करहि बीचारु ॥
साहे ऊपरि एकंकारु ॥ (पन्ना ९०४)

जिसके अंदर परमात्मा बसता है उसके लिए सभी महीने, सभी ऋतुयें सुहावनी हैं :

बे दस माह रुती थिती वार भले ॥
घड़ी मूरत पल साचे आए सहजि मिले ॥
(पन्ना ११०९)

श्री गुरु नानक देव जी स्पष्ट रूप से समझाते हैं कि जो मनुष्य परमात्मा की बंदगी को छोड़कर कर्मकांडों में उलझे रहते हैं वे मानो वृक्ष के मूल का त्याग कर डाली से छाया की उम्मीद करते हैं :

जिन्ही नामु विसारिआ दूजै भरमि भुलाई ॥
मूलु छोडि डाली लगे किआ पावहि छाई ॥
(पन्ना ४२०)

तीर्थ-स्नान, व्रत आदि फोकट कर्मों से मन की अपवित्रता दूर नहीं होती। प्राय: ये कर्म अहंकार की मैल को बढ़ाते हैं। यदि अंदर क्रोध है, लोभ है, लोभ के अधीन छल-कपट किया जाता है तो शरीर को कष्ट देने से, शरीर को धोने से या मौन धारण करने से मन पवित्र नहीं हो सकता :

-मनि जूठै तनि जूठि है जिहवा जूठी होइ ॥
मुखि झूठै झूठु बोलणा किउ करि सूचा होइ ॥
(पन्ना ५५)
-अंतरि मैलु लोभ बहु झूठे बाहरि नावहु काही जीउ ॥ (पन्ना ५९८)
-अंतरि मैलु तीरथ भरमीजै ॥
मनु नही सूचा किआ सोच करीजै ॥
(पन्ना ९०५)

जपु जी साहिब में गुरु साहिब विस्तार से समझा रहे हैं कि यदि लाख बार भी स्नान आदि से शरीर को पवित्र करते रहें तो भी मन पवित्र नहीं हो सकता। यदि शरीर को लगातार समाधिस्थ रखा जाये तो भी मन का भटकना समाप्त नहीं होता, मन चुप नहीं बैठता :

सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ॥
चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिव तार ॥
भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ॥
सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥
(पन्ना १)

परमात्मा के नाम रूपी अमृत जल में स्नान करने से मन तथा तन दोनों पवित्र हो जाते हैं :

गिआनि महा रसि नाईऐ भाई मनु तनु निरमलु होइ ॥ (पन्ना ६३७)

सारे कर्म-धर्म के यत्न, जप, तप, तीर्थ-स्नान, ये सब गुरु-शबद में बसते हैं अर्थात् गुरमति के सिद्धांतों के अनुसार जीवन को ढालने वाले को इन कर्मों की आवश्यकता नहीं रह जाती :

-सगले करम धरम सुचि संजम जप तप तीरथ सबदि वसे ॥ (पन्ना १३३२)
-सभसै ऊपरि गुर सबदु बीचारु ॥
होर कथनी बदउ न सगली छारु ॥(पन्ना ९०४)

श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार सत्य

को धारण करना व्रत, दया देवता, क्षमा माला तथा प्रभु का ध्यान तीर्थों का स्नान है :

सचु वरतु संतोखु तीरथु गिआनु धिआनु इसनानु ॥
दइआ देवता खिमा जपमाली ते माणस परधान ॥
(पन्ना १२४५)

कई मनुष्य भक्ति के मार्ग पर चलने के लिए अनेक साधनों का आश्रय लेते हैं; जल धारा में निवास करते हैं, अग्नि-तप करते हैं गेरूए रंग के वस्त्र धारण करते हैं; धूनियां तपाते हैं; अनेक भूखे रहते हैं या अन्न का त्यागकर दूधाधारी बन जाते हैं; गृह त्यागकर जंगल में या पहाड़ पर निवास करते हैं; मौन धारण कर लेते हैं। ऐसे लोगों के लिए गुरु साहिब का कथन है :

-अंनु न खाइआ सादु गवाइआ ॥
बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ ॥
बसत्र न पहिरै ॥ अहिनिसि कहरै ॥
मोनि विगूता ॥ किउ जागै गुर बिनु सूता ॥
(पन्ना ४६७)

-इकि वण खंडि बैसहि जाइ सदु न देवही ॥
इकि पाला ककरु भंनि सीतलु जलु हेंवही ॥
इकि भसम चढ़ावहि अंगि मैलु न धोवही ॥
इकि जटा बिकट बिकराल कुलु घरु खोवही ॥
इकि नगन फिरहि दिनु राति नींद न सोवही ॥
इकि अगनि जलावहि अंगु आपु विगोवही ॥
विणु नावै तनु छारु किआ कहि रोवही ॥
सोहनि खसम दुआरि जि सतिगुरु सेवही ॥
(पन्ना १२८४)

कई डंडा, मुंद्रा, झोली आदि धारण करते हैं। अनेक लोग कुंडलनी दशम द्वार में खोलते हैं। मन के हठ से प्राण ऊपर चढ़ाकर सुखमना में रोककर रखते हैं, फिर नीचे उतारते हैं। इन सब कर्मों से प्रभु अंदर प्रकट नहीं होता, प्रभु से मिलाप नहीं होता। इन कर्मों में लीन मनुष्य प्रभु-प्राप्ति के मार्ग से भटक जाता है। गुरु साहिब ने भिन्न-भिन्न कर्मकांडों का विस्तार से वर्णन किया है :

-करहि बिभूति लगावहि भसमै ॥
अंतरि क्रोधु चंडालु सु हउमै ॥
पाखंड कीने जोगु न पाईऐ बिनु सतिगुर अलखु न पाइआ ॥ (पन्ना १०४३)

-निउली करम भुइअंगम भाठी ॥
रेचक कुंभक पूरक मन हाठी ॥
पाखंड धरमु प्रीति नही हरि सउ गुर सबद महा रसु पाइआ ॥ (पन्ना १०४३)

जोगु न खिंथा जोगु न डंडै जोगु न भसम चड़ाईऐ ॥
जोगु न मुंदी मूंडि मुडाइए जोगु न सिंङी वाईऐ ॥
अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥ (पन्ना ७३०)

गुरु साहिब समझा रहे हैं कि गोदड़ी पहन लेना, परमात्मा के साथ मिलाप का साधन नहीं है। हाथ में डंडा पकड़ लेने से, शरीर पर राख मल लेने से या कानों में मुंद्रा पहन लेने से परमात्मा का दीदार नहीं हो सकता। कपड़े उतारकर नग्न साधु बन जाना भी व्यर्थ उद्यम है। धूनियों से शरीर को तंदूर के समान तपाने तथा हड्डियों को ईंधन के समान जलाने अर्थात् शरीर को कष्ट देने का कोई लाभ नहीं। ये सब व्यर्थ के उद्यम छोड़कर परमात्मा को अंतरात्मा में खोजना चाहिए :

तनु न तपाइ तनूर जिउ बालणु हड न बालि ॥
सिरि पैरी किआ फेड़िआ अंदरि पिरी सम्हालि ॥
(पन्ना १४११)

कर्मकांड को महत्त्व देने वाले, इन साधनों को अपनाकर योगी कहलाने वाले मनुष्यों का लक्ष्य बेशक प्रभु-मिलाप होता है पर वे जिन साधनों को सहायक समझते हैं उनके ही जाल में फंसकर अपने उद्देश्य से भटक जाते हैं। उनका मन धारे हुए वेश या अपनाये हुए साधनों को संभालने में ही लगा रहता है। यह

ठीक है कि धर्म के साधनों में शरीर का बहुत महत्त्व है, शरीर का स्वस्थ तथा निरोग होना जरूरी है, निरोग शरीर से ही भक्ति की जा सकती है पर भक्ति का मार्ग प्रेम का मार्ग है। इस मार्ग पर चलने के लिए विकारों का त्याग तथा मन की स्थिरता आवश्यक है :

सबदु वसै सचु अंतरि हीआ ॥
तनु मनु सीतलु रंगि रंगीआ ॥
कामु क्रोधु बिखु अगनि निवारे ॥
नानक नदरी नदरि पिआरे ॥ (पन्ना ९४३)

मनुष्य कई तरह के वेश, चिन्ह या साधन अपना तो लेता है परंतु उसका आचरण उसकी वेशभूषा के विपरीत होता है। उसकी वेशभूषा पाखंड बन जाती है।

श्री गुरु नानक देव जी दृढ़ करवा रहे हैं कि योग के साधनों से यदि ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त भी हो जाये तथा सारा संसार आदर-सम्मान करने भी लगे तो भी ये सब व्यर्थ हैं क्योंकि इन ऋद्धियों-सिद्धियों को प्राप्त करके परमात्मा को भूल जाने का खतरा बना रहता है :

सिधु होवा सिधि लाई रिधि आखा आउ ॥
गुपतु परगटु होइ बैसा लोकु राखै भाउ ॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥
(पन्ना १४)

मनुष्य अज्ञानता के कारण भ्रम में पड़कर सूतक आदि को मानने लग गया है। श्री गुरु नानक देव जी समझाते हैं कि इनके भ्रम में पड़ने के स्थान पर मनुष्य को अपने अंदर से लोभ, झूठ, निंदा, पराई स्त्री पर कुदृष्टि आदि विकारों को दूर करना चाहिए। ये उसके हृदय-घर को सदैव अपवित्र तथा मलिन करते रहते हैं तथा उसके आचरण को भ्रष्ट कर देते हैं :

मन का सूतकु लोभु है जिहवा सूतकु कूड़ु ॥
अखी सूतकु वेखणा पर त्रिअ पर धन रूपु ॥
कंनी सूतकु कंनि पै लाइतबारी खाहि ॥
नानक हंसा आदमी बधे जम पुरि जाहि ॥
(पन्ना ४७२)

गुरु के शबद के विचार के बिना किसी का रहन-सहन अच्छा नहीं हो सकता :

बिनु सबदै आचारु न किन ही पाइआ ॥
(पन्ना १२८५)

सिफति-सालाह वाला गुरु का शबद ही वास्तविक जप-तप बन जाता है :

जपु तपु सभु इहु सबदु है सारु ॥ (पन्ना ६६१)

गुरु-शबद के अनुसार जीवन-यापन न करने से सारे कर्म-धर्म पाखंड बन जाते हैं :

बिनु गुर सबद न छूटसि कोइ ॥
पाखंडि कीन्है मुकति न होइ ॥ (पन्ना ८३९)

गुरु-शबद की कमाई करके मनुष्य का हृदय प्रभु के नाम-रंग में रंग जाता है तथा वो उच्च आत्मिक जीवन प्राप्त कर लेता है। वो नाम रूपी तीर्थ पर स्नान करता हुआ आत्मिक अडोलता में टिककर अनंत प्रभु से मिलाप के रास्ते पर चल पड़ता है :

तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है ॥
तीरथु सबद बीचारु अंतरि गिआनु है ॥
(पन्ना ६८७)
नानक बिनु नावै जोगु कदे न होवै देखहु रिदै बीचारे ॥ (पन्ना ९४६)

परमात्मा का नाम ही संयम, जप-तप तथा तीर्थ-स्नान है। नाम-सिमरन से मनुष्य धार्मिक मर्यादा वाला बनता है :

आचारि तू वीचारि आपे हरि नामु संजम जप तपो ॥
सखा सैनु पिआरु प्रीतमु नामु हरि का जपु जपो ॥
(पन्ना ११११३)

नाम-सिमरन को सभी कर्मों में महानता प्रदान की गयी है :

करम धरम प्रभि मेरै कीए ॥
नामु वडाई सिरि करमां कीए ॥(पन्ना १३४५) ❋

नवचेतना के संस्थापक : श्री गुरु नानक देव जी

*-डॉ. साहिब सिंघ अरशी**

पंद्रहवीं शताब्दी की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक दशा डांवांडोल थी। जनसाधारण कुरीतियों के अंधकार में परेशान था। प्रजा के रक्षक ही प्रजा के भक्षक बने हुए थे। धर्म के नाम पर बेईमानी तथा झूठ की दुकानें खुली हुई थीं। अंधविश्वास ने प्रजा को अज्ञानी बना दिया था। इस दशा के बारे में श्री गुरु नानक देव जी ने बाणी में इस प्रकार बयान किया है :

कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ ॥
कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ ॥
(पन्ना १४५)

इस प्रकार की दशा को श्री गुरु नानक देव जी ने देखा और भांपा। धरती के लोगों के हालात को भाई गुरदास जी ने भी पहली वार में इस प्रकार दर्शाया है :

बाबा देखै धिआनु धरि जलती सभि प्रिथवी दिसि आई।
बाझु गुरू गुबारु है है है करदी सुणी लुकाई।
(वार १:२४)

इस तरह पीड़ित मानवता का उद्धार करने के लिए श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी सांसारिक यात्रा प्रारंभ की, जिसका वर्णन भाई गुरदास जी के शब्दों में इस प्रकार है :

सुणी पुकारि दातार प्रभु गुरु नानक जग माहि पठाइआ। (वार १:२३)

भाई गुरदास जी बयान करते हैं कि श्री गुरु नानक देव जी के आगमन से सभी ओर इस तरह प्रकाश का पसारा हो गया, जैसे सूर्य के निकलने से सितारे छिप जाते हैं तथा अंधकार दूर हो जाता है; शेर की गर्ज सुनकर सभी जीव-जंतु डर से धैर्य खो बैठते हैं। इसी प्रकार श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश से पाप आलोप होने लगा तथा जहां भी आप ने चरण डाले, वह पूजा का स्थान बन गया।

आप जी ने पहला कार्य समाज को सही दिशा दर्शाने का शुरू किया। बचपन में जनेव का न पहनना उस समय की प्रचलित रस्मों एवं रीति-रिवाज़ों को एक चुनौती था। आप जी ने पंडित से कहा :

दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु ॥
एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु ॥
(पन्ना ४७१)

यह जनेव नाश होने वाला नहीं :

ना एहु तुटै ना मलु लगै ना एहु जलै न जाइ ॥
(पन्ना ४७१)

आप जी ने सूतक पड़ जाने की रस्म के बारे में भी जनसाधारण को सुचेत किया कि क्या कुछ ही वस्तुओं में सूतक पड़ता है? क्या खाने-पीने की वस्तुओं में या रसोई में सूतक नहीं पड़ता? फिर चुनाव क्यों? सब वस्तुओं को क्यों नहीं फेंक दिया जाता? आप जी ने फोकट आडंबरों तथा भेसों को तिलांजलि देने पर ज़ोर दिया। उस समय के प्रचलित पाखंडवाद के भेदों का पर्दाफाश किया तथा नवचेतना का संदेश देते हुए समाज को झंझोड़ा :

**५७०७, माडर्न डुप्लेक्स, मनीमाजरा (चंडीगढ़)- १६०१०१; फोन ९४६३३२७५५७*

पड़ि पुसतक संधिआ बादं ॥
सिल पूजसि बगुल समाधं ॥
मुखि झूठ बिभूखण सारं ॥
त्रैपाल तिहाल बिचारं ॥
गलि माला तिलकु लिलाटं ॥
दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥
जे जाणसि ब्रहमं करमं ॥
सभि फोकट निसचउ करमं ॥ (पन्ना ४७०)

श्री गुरु नानक देव जी ने स्पष्ट शब्दों में अपना संदेश सबको दिया तथा अज्ञानता के अंधेरे में से निकलने के लिए यह फरमान किया :

छोडीले पाखंडा ॥
नामि लइऐ जाहि तरंदा ॥ (पन्ना ४७१)

आप जी ने प्रचलित सती-प्रथा की निंदा की। स्त्री के हक (पक्ष) में आवाज़ बुलंद करके सदियों से पिसी जाती स्त्री जाति को समाज में समानता का दर्जा दिलाने के लिए यह फरमान किया :

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥
(पन्ना ४७३)

बाबर ने अपने हमले के दौरान जो तबाही मचाई, उस पीड़ा को आप जी ने महसूस किया तथा उच्चारण किया :

एती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ ॥
(पन्ना ३६०)

बाबर को जाबिर कहना श्री गुरु नानक देव जी के हिस्से आया। यही कारण था कि आप जी की शख़्सियत से प्रभावित होकर बाबर ने 'तुज़कि-बाबरी' में आप जी के बारे में लिखा कि अगर मुझे मालूम होता कि भारत में ऐसे संत-महात्मा का निवास है तो मैं कभी भारत पर हमला न करता। इससे श्री गुरु नानक देव जी की उच्च प्रतिभा का अनुमान लगाया जा सकता है।

श्री गुरु नानक देव जी के दर्शाये मार्ग से मानवता को राहत मिली। उन्होंने बेईं नदी की घटना के उपरांत सबसे पहला संदेश यह दिया : *"ना हम हिंदू ना मुसलमान।"*

आप जी ने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक स्तर पर एक नये निज़ाम की स्थापना की, जिसके बारे में उल्लेख प्राप्त होता है :

नानकि राजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीव दै ॥ (पन्ना ९६६)

सत्य की बुनियाद पर इस इमारत की स्थापना की। *"राजा रंक बराबरी"* वाले निज़ाम को मूर्तिमान किया। हिंदू एवं मुसलमान को अपने फर्ज़ों से अवगत करवाया तथा किसी दूसरे के हक को छीनने से सुचेत करते हुए आप जी ने दोनों को वर्जित करते हुए कहा :

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
(पन्ना १४१)

श्री गुरु नानक देव जी ने अपने जीवन-काल में चारों दिशाओं में उदासियां (प्रचार-यात्राएं) कीं, जिनका लक्ष्य संसार में कूड़ की दीवार को गिराकर सत्य के महल का निर्माण करना था। जहां भी आप जी गए, वहीं आपने संदेश द्वारा सबको प्रभावित किया तथा उनके भ्रम तोड़कर सीधे रास्ते पर डाला। मक्का-मदीना गये तो काज़ियों के भ्रम को तोड़ा। सिद्धों के भ्रम को तोड़ने हेतु सिद्धों से गोष्ठियां कीं। सिद्धों ने मुलाकात के समय कई प्रकार की करामातें दिखाईं तथा श्री गुरु नानक देव जी को भी करामात दिखाने के लिए कहा ताकि पता चल सके कि कौन बड़ा साबित होता है। आप जी ने उनके अहंकार को पहचानकर यह कहा, जो भाई गुरदास जी के शब्दों में इस प्रकार है :

सिधि बोलनि सुणि नानका! तुहि जग नो करामाति दिखाई।. . .

बाबा बोले नाथ जी! असि वेखणि जोगी वसतु न काई।
गुरु संगति बाणी बिना दूजी ओट नही है राई।
(वार १:४२)

हरिद्वार के मेले में गये तो देखा कि लोग अज्ञानतावश सूर्य की तरफ मुंह करके पानी दे रहे थे। आप जी ने उनके उल्ट पश्चिम की तरफ मुंह करके पानी देना शुरू कर दिया। श्रद्धालुयों के पूछने पर आप जी ने कहा कि "मेरी खेती करतारपुर में सूख रही है, मैं अपने खेतों को पानी दे रहा हूं।" लोग हंसकर कहने लगे कि "क्या यह पानी दूर खेतों को पहुंच जायेगा?" आप जी ने उत्तर दिया, "अगर आपका दिया हुआ पानी सूर्य तक पहुंच सकता है तो उससे कम फासले पर मेरे खेतों में भी यह पानी जाना चाहिए।" इस प्रकार उनको अंधकार में से निकालकर सत्य के प्रकाश का मार्ग दिखाया। श्री गुरु नानक देव जी का सबके लिए एक ही संदेश था कि वहमों-भ्रमों को छोड़कर अकाल पुरख की बंदगी करो। आप जी का संदेश उर्दू शायर के शब्दों में इस प्रकार है :

छोड़ कर खालक को क्यों तखलीक की पूजा करो?
बंदगी करनी है तो करतार को सजदा करो।
(नज़रे-नानक, महदी नज़मी, पृष्ठ १५१)

सृष्टि की सृजना के बारे में आप जी ने फरमाया कि जब उस कर्ता की इच्छा हुई तो सृष्टि अस्तित्व में आई। इससे पहले सब धुंधूकार की अवस्था थी। आप जी के प्रकटाये ख़्याल अब भी वैज्ञानिकों के लिए खोज का विषय बने हुए हैं तथा वे इस तथ्य की खोज़ के लिए यत्नशील हैं। आज से कई सौ वर्ष पहले आप जी ने कहा था :

पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥
(पन्ना ५)

गुरु जी ने जीवन के सत्य को सबके सामने रखा; माया के झूठे पसारे तथा झूठे मोह के त्याग के लिए प्रेरित किया कि अंतिम समय यह सांसारिक माया हमारे साथ नहीं जाती। संसार के बारे में उनका स्पष्ट शब्दों में फरमान है :

कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु ॥
(पन्ना ४६८)

गुरु जी के जीवन से सम्बंधित अनेकों दृष्टांत हमारे जीवन-पथ को दिशा प्रदान करते हैं। आप जी ने जीवन में वास्तविक तौर पर हर काम किया, मात्र सिद्धांतों तक ही सीमित नहीं रहे। गुरगद्दी देने के समय भी आप जी ने सुपुत्रों को एक तरफ करके भाई लहिणा जी (जो बाद में श्री गुरु अंगद देव जी कहलाए) का चुनाव किया तथा यह दर्शाया कि गुरगद्दी विरासती नहीं बल्कि इस पर निष्काम सेवा करने वालों का हक है।

गुरु जी ने जनसाधारण को नाम जपने, किरत करने, वंड छकने का उपदेश दिया। जो नवचेतना श्री गुरु नानक देव जी ने दी, जो मार्ग उन्होंने दर्शाये, वे अब तक हमारे लिए प्रकाश-स्तंभ हैं। श्री गुरु नानक देव जी के प्रति सच्चा प्यार तथा सच्ची श्रद्धांजलि उनके दर्शाये मार्ग पर चलना ही है। 

श्री गुरु नानक देव जी : समाज-सुधारक के रूप में

-स. बलबीर सिंघ*

पंद्रहवीं सदी में श्री गुरु नानक देव जी के आगमन के समय लोग अनेक प्रकार के भ्रम-जाल में फंसे हुए थे। भिन्न-भिन्न प्रकार के देवी-देवताओं व पेड़, पक्षी, पशुओं की पूजा ने लोगों का जीना दुष्वार कर दिया था। धार्मिक अगुआ पथ-भ्रष्ट हो चुके थे। इन हालातों का विवरण गुरु जी ने अपनी बाणी में इस तरह दिया है :

कादी कूड़ु बोलि मलु खाइ ॥
ब्राहमणु नावै जीआ घाइ ॥
जोगी जुगति न जाणै अंधु ॥
तीने ओजाड़े का बंधु ॥ (पन्ना ६६२)

ऐसे में आपका जन्म अंधेरे में प्रकाश आने के समान था :

सतिगुरु नानकु प्रगटिआ मिटी धुंधु जगि चानणु होआ।
जिउ करि सूरजु निकलिआ तारे छपि अंधेरु पलोआ। (वार १:२७)

जनेऊ धारण करवाने आए पंडित हरि दयाल को उन्होंने यह कहकर मना कर दिया कि यह धागे का बना जनेऊ गल-सड़ जाएगा। मुझे ऐसा (गुणों से युक्त) जनेऊ पहनाओ जो जीवन भर, हर कदम मेरे साथ रहे :

दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु ॥
एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु ॥
(पन्ना ४७१)

हरिद्वार में सूर्य की ओर मुंह कर पानी चढ़ा रहे लोगों को भ्रम से मुक्त करवाया। जगन्नाथपुरी में आरती कर रहे लोगों को समझाया कि आरती तो ब्रह्मांड में अपने आप हो रही है। गुरु जी ने बाणी रूप में 'आरती' गायन कर बताया :

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥
कैसी आरती होइ भव खंडना तेरी आरती ॥
अनहता सबद वाजंत भेरी ॥ . . . (पन्ना १३)

गुरु जी की शख़्सियत का प्रभाव था कि उन्होंने सज्जन नामक ठग को 'सज्जन' और कौडे जैसे दानव को 'मानव' बना दिया। नारी वर्ग का शोषण आदि काल से भारतीय समाज में हो रहा था। गुरु जी ने नारी-उत्थान के लिए बुलंद आवाज़ में कहा :

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥
(पन्ना ४७३)

जातिवाद में वितरित भारतीय समाज में तथाकथित शूद्र और निम्न जाति को शुरू से ही घृणा की जा रही थी। गुरु जी ने निम्न कहे जाने वाले लोगों को गले लगाया और सबको समझाया कि सभी में ईश्वर की ज्योति को पहचानो तभी आपसी भाईचारा कायम रह सकेगा :

जाणहु जोति न पूछहु जाती आगै जाति न हे ॥
(पन्ना ३४९)

भांति-भांति के देवी-देवताओं की पूजा करना एवं मढ़ी-मसाण पर जाना छोड़कर एकेश्वरवाद का सिद्धांत अपनाओ :

दुबिधा न पड़उ हरि बिनु होरु न पूजउ मड़ै मसाणि न जाई ॥ (पन्ना ६३४)

(शेष पृष्ठ १४ पर)

*६, महेश नगर, अंबाला छावनी।

सतिगुरु नानकु प्रगटिआ . . .

*-डॉ. मनमोहन सिंघ**

श्री गुरु नानक देव जी के इस धरती पर आने के बारे में जो कुछ भाई गुरदास जी ने एक छंद में कहा है, वह उस समय की बदलती हुई स्थिति का एवं आशा से भरपूर वर्णन है। भाई साहिब कहते हैं :

सतिगुरु नानकु प्रगटिआ
मिटी धुंधु जगि चानणु होआ।
जिउ करि सूरजु निकलिआ तारे छपि अंधेरु पलोआ। *(वार १:२७)*

अंधेरे से भरे एक कमरे को मोमबत्ती का प्रकाश रोशनमय कर देता है। जिस प्रकार मोमबत्ती अंधेरे भरे कमरे में चमकती है उसी प्रकार भलाई का एक छोटा-सा कार्य भी संसार में चमकता है।

श्री गुरु नानक देव जी ने समय की कुरीतियों की धुंध को दूर कर समाज को रोशनी प्रदान की। श्री गुरु नानक देव जी ने जो उजियाला दुनिया में अपने उपदेशों द्वारा किया उसकी महिमा आज संसार के सारे धर्मात्मा गा रहे हैं। जब श्री गुरु नानक साहिब पुरी के मंदिर में जाते हैं, तब वहां के पंडितों द्वारा की जा रही भगवान की आरती को देखकर फरमान करते हैं कि उस परवरदिगार की आरती तो सारा ब्रह्मांड कर रहा है। वहां गुरु साहिब ने 'आरती' वाला शबद उच्चारण किया तथा वास्तविक आरती का सिद्धांत समझाया।

कुछ साल पहले जर्मनी के शहर बौन में समूह धर्मों के विद्वानों का एक बहुत बड़ा सम्मेलन हुआ था। वहां पर अलग-अलग धर्मों के विषय में पर्चे पढ़े गये। कान्फ्रेंस में डाक्टर विलियम हैमबर्ग ने सिक्ख धर्म के विषय में जो पर्चा पढ़ा उसमें लिखा था कि सिक्ख धर्म दुनिया का केवल एक ही ऐसा धर्म है जो विज्ञान-आधारित धर्म है।

श्री गुरु नानक देव जी पृथ्वी पर पहले ऐसे पैगंबर हुए हैं, जिन्होंने किसी धर्म, ईमान या दीन का खंडन नहीं किया। वे प्रत्येक धर्म का सत्कार करते थे। श्री गुरु नानक देव जी से शुरू हुआ वह सत्कार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक उसी प्रकार चलता रहा और आज भी सिक्ख अपने गुरु-उपदेशानुसार सारे धर्म के लोगों के साथ मैत्री-भाव रखते हैं।

श्री गुरु नानक देव जी की भारत के लोगों पर बहुत बड़ी कृपा है। 'हिंदोस्तान' शब्द का सबसे पहले प्रयोग बाणी में श्री गुरु नानक देव जी ने ही किया, जब उन्होंने बाबर के जुल्मों का वर्णन करते हुए 'हिंदोसतान डराइआ' का ज़िक्र किया। हिंदोस्तान में लोगों को चार वर्णों में विभाजित करके यहां छूआ-छूत की नींव को पक्का कर दिया गया था। इंसान को इंसान से दूर किया जा रहा था। श्री गुरु नानक देव जी ने चारों वर्णों को एक ही उपदेश दिया। जहां उनका उपदेश पहुंचा वहां पर फिर जात-पात व ऊंच-नीच के भेदभाव की परछाईं तक नहीं पहुंच सकी।

श्री गुरु नानक देव जी ने संसार की चारों दिशाओं का भ्रमण किया, जिन्हें 'चार उदासियां' कहा जाता है। उन्होंने हर प्रकार के लोगों व धर्म के मानने वालों के साथ विचार-विमर्श किया। उनका मनोरथ समस्त मानवता को एक प्लेटफार्म पर लाना था। इतना बड़ा कार्य प्यार व मोहब्बत के साथ ही हो सकता है। किसी को गलत रास्ते पर मुड़ा हुआ देखा तो उसे सीधे रास्ते पर लाने

८८९, फेज़-१०, मोहाली-१६००६२

का प्रयत्न किया। प्यार की भाषा से उसे प्रत्येक बात का महत्त्व समझाया।

श्री गुरु नानक देव जी का मक्का-मदीना जाना भी एक मिशन था। जो लोग एक खास जगह को अल्लाह का घर समझते थे, उन्हें समझाना था कि अल्लाह तो हर जगह विद्यमान है। वह चारों ओर है। उन्होंने बहुत ही आदर के साथ कहा कि "भाई! मेरी टांगें उधर कर दो जिधर अल्लाह का घर नहीं है।" इस बात से सबके भ्रम दूर हो गए।

श्री गुरु नानक देव जी के मिशन के अनेक पात्र हमारे सामने आते हैं। कहीं सज्जन ठग है, कहीं वली कंधारी है और कहीं कौडा राक्षस है। गुरु जी ने सबको शबद के माध्यम से उपदेश देकर सन्मार्ग पर चलने को प्रेरित किया।

श्री गुरु नानक देव जी का मिशन जितना बड़ा था, हम उतने बड़े प्रयत्नों के साथ उसे संसार में फैला नहीं सके। आज की दुनिया के लिए अगर कोई सबसे बढ़िया प्रोग्राम है तो वो है श्री गुरु नानक देव जी के उपदेशों का प्रचार-प्रसार करना। श्री गुरु नानक देव जी ने सिद्धों से कहा था कि आप निजी मुक्ति व निजी ज्ञान के लिए संसार के लोगों को भटकते हुए छोड़कर खुद पहाड़ों पर चले जाते हो। आपको अपनी निजी मुक्ति की तो इच्छा है जबकि बाकी समाज तो कुरीतियों के अंधेरे में ही पड़ा हुआ है। उसे कौन मुक्ति का मार्ग सुझाएगा? उसे कौन मुक्त कराएगा? 

श्री गुरु नानक देव जी : समाज-सुधारक के रूप में *(पृष्ठ १२ का शेष)*

ईश्वर की सुंदर परिभाषा का व्याख्यान गुरु जी ने 'मूल मंत्र' में किया है :

ੴसति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

गुरु जी के समय समाज में तथाकथित ब्राह्मण वर्ग सर्वोपरि था। वह अनेकों अवगुणों से भरपूर होने पर भी समाज में पूज्य था। उसके द्वारा फैलाए आडंबरों ने धर्म को एक पहेली बना दिया था। वह अपनी तीव्र बुद्धि से सभी को मूर्ख बना रहा था और उनका शोषण कर रहा था। जन्म से लेकर मरण तक के धार्मिक संस्कारों के लिए समाज ब्राह्मण वर्ग पर आश्रित हो चुका था।

गुरु जी ने अपनी बाणी में स्पष्ट तौर पर बताया कि मरने के बाद मुक्ति की प्राप्ति मनुष्य के अपने कर्मों के आधार पर है। मृतक के सम्बंधियों द्वारा किए पत्तल, श्राद्ध आदि क्रियाएं इसमें कोई सहायता नहीं देते :

आइआ गइआ मुइआ नाउ ॥
पिछै पतलि सदिहु काव ॥
नानक मनमुखि अंधु पिआरु ॥
बाझु गुरू डुबा संसारु ॥ *(पन्ना १३८)*

उस समय प्रभु-प्राप्ति का इच्छुक साधु समाज घर-बार त्यागकर, सन्यासी बनकर जंगलों में रहा करता था, लेकिन पेट की भूख मिटाने के लिए वह गृहस्थियों पर ही आश्रित होता था। आपने सिक्खों को तीन सुनहरी नियम बताए- (१) नाम जपना (२) किरत करना (३) वंड छकना। गुरु जी ने समझाया :

गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ ॥
ता कै मूलि न लगीऐ पाइ ॥
घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ *(पन्ना १२४५)*

गुरु जी ने समाज में आई कुरीतियों को दूर करने के लिए नई विचारधारा, नया फलसफा इस संसार को दिया, जो न केवल सिक्ख धर्म बल्कि हर धर्म के लोगों के लिए भी लाभकारी है। यदि हम समाज में सुख-समृद्धि देखना चाहते हैं तो श्री गुरु नानक देव जी द्वारा मानवता को दिखाया मार्ग ही सही मार्ग है। हम सभी को इसे अपनाना चाहिए। 

श्री गुरु तेग बहादर साहिब

-स. सतनाम सिंघ कोमल*

श्री गुरु तेग बहादर साहिब का जन्म श्री अमृतसर में ५ वैसाख, संवत् १६७८ तदनुसार १ अप्रैल, १६२१ ई को हुआ। आप जी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के छोटे साहिबज़ादे थे। आप शुरू से ही एकांत-पसंद एवं भक्ति में लीन रहने वाले स्वभाव के मालिक थे। आप की शादी माता गुजरी जी के साथ हुई। जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ज्योति-जोत समा गये तो आप जी बकाला नामक गांव में आ गये। आठवें पातशाह श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ज्योति-जोत समाने से पहले 'बाबा बकाला' कह गये थे जिसका मतलब था कि उनके उत्तराधिकारी बकाला नामक गांव में हैं और रिश्ते में उनके बाबा (दादा) लगते हैं। भाई मक्खण शाह एक व्यापारी था और गुजरात के काठियावाड़ में सिक्खी का प्रचारक था। उसकी अगुआई में सिक्खों ने नवम् गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब की खोज कर ली। "गुरु लाधो रे! गुरु लाधो रे!!" की आवाज़ बुलंद हुई तो गुरगद्दी के अन्य दावेदारों ने गुरु जी पर हमला कर दिया और उन्हें ज़ख्मी कर दिया तथा वहां लूटपाट भी की। इसके पीछे धीरमल का हाथ था। गुरु जी के सिक्खों ने भी उन पर हमला करके अपना सामान तो वापस लिया ही उनका भी छीन ले आये। साथ ही छीहें मसंद को भी बांधकर ले आये जिसने गुरु जी पर गोली चलाई थी। गुरु जी ने उसे छोड़ दिया और उनका सामान भी वापिस कर दिया। सिक्ख उनसे श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ (मूल प्रति) भी ले आये थे। गुरु जी ने उसे भी वापिस कर दिया। अब भी यह करतारपुर (ज़िला जलंधर) में धीर मल के वंशजों के पास है।

गुरु जी जब धर्म-प्रचार एवं समाज-सुधार के कार्य करने लगे तो पुजारियों की तरफ से विरोध होने लगा। जब गुरु जी श्री हरिमंदर साहिब गये तो पुजारियों ने दरवाज़े बंद कर दिये। गुरु जी दर्शन किये बगैर वहां से कीरतपुर साहिब आ गये। वहां भी धीर मल के साथियों की तरफ से विरोध होने लगा। गुरु जी ने कहिलूर के राजा से एक रमणीक पहाड़ी को खरीदकर उस पर एक नगर बसाया जो पहले 'चक्क नानकी' तथा बाद में 'श्री अनंदपुर साहिब' के नाम से विख्यात हुआ।

गुरु जी प्रचार के लिए मालवा और बांगर क्षेत्र में आ गये। आपने नेक काम करने एवं आपस में प्यार से रहने की प्रेरणा दी। आपने बताया कि धर्म में परिपक्व रहना ही हर इंसान का फर्ज़ है। आपके पास जो धन इकट्ठा होता उससे आप कुएं और तालाब खुदवा देते।

गुरु जी प्रचार करते हुए आगरा, इलाहाबाद बनारस, गया और पटना पहुंच गये। गुरु जी ने 'कर्मनाश' नदी में स्नान कर लोगों के भ्रम को तोड़ा। गुरु जी ने कहा कि कोई भी पानी शुभ कर्मों, गुणों का नाश नहीं कर सकता बल्कि वो तो हमारे शरीर को निर्मल करता है। परिवार को पटना साहिब छोड़कर गुरु जी आसाम, ढाका की ओर प्रचार के लिए चले गये। गुरु जी के दर्शन करके सिक्ख बहुत खुश

*२४८, अर्बन अस्टेट, लुधियाना-१४१०१०; मो: ९८७२६०९९२१

हुए। उन्होंने गुरु जी का बहुत सत्कार किया। ढाका में ही गुरु जी को ख़बर मिली कि उनके घर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म हुआ है। गुरु जी ने अपनी प्रचार-यात्रा जारी रखी और पटना साहिब की संगत के नाम 'हुकमनामा' बधाई एवं धन्यवाद का लिखा।

जब गुरु जी परिवार सहित वापिस श्री अनंदपुर साहिब आए तो वहां उन्होंने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को हर तरह की शिक्षा देने का इंतजाम किया। गुरु जी का प्रचार-कार्य भी जारी रहा। गुरु जी जब प्रचार करने किसी भी क्षेत्र में जाते तो वहां धन आदि का एकत्र होना स्वाभाविक था। मुखबिरों ने बादशाह औरंगजेब के कान भरने शुरू कर दिए कि इस धन का इस्तेमाल हकूमत के खिलाफ किया जा रहा है।

इफ्तिखार खां (१६७१-१६७५ ई) कश्मीर का गवर्नर था। उसने कश्मीरियों पर बहुत जुल्म किये। इस जुल्म से दुखी होकर पंडित कृपा राम की रहनुमाई में पंडितों का एक दल २५ मई, १६७५ ई को श्री अनंदपुर साहिब आया। उसने अपने दुख की कहानी गुरु जी के सामने बयान की। गुरु-घर की यह रिवायत रही है कि कोई भी फरियादी फरियाद लेकर आये खाली हाथ वापिस नहीं जाता। गुरु जी ने उनको धैर्य रखने को कहा। गुरु जी ने उनकी सहायतार्थ हर तरह की कुर्बानी देने का वचन दिया। ख़बर-नवीसों ने इस मुलाकात की सूचना बादशाह औरंगज़ेब को दे दी। वो सारे हिंदोस्तान को मुसलमान देखना चाहता था। उसके इस काम में जो भी रोड़ा बने उसे गवारा नहीं था। उस समय वो हसन अब्दाल में था। उसने फरमान जारी कर दिया कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब को गिरफ्तार कर लिया जाये। गुरु जी को गिरफ्तार कर लिया गया। गुरु जी को दिल्ली ले जाया गया। दिल्ली के सूबेदार और काज़ी गुरु जी को मुसलमान बनने के लिए प्रेरणा करते रहे, लेकिन गुरु जी पर कोई असर न हुआ। गुरु जी कहते रहे कि "धर्म के आगे ज़िंदगी कुछ नहीं है। धर्म की आज़ादी हर मनुष्य का हक है। इसमें किसी का दख़ल नहीं होना चाहिए। जबरन किसी का धर्म बदलवाना कहां का इंसाफ है? मैं इसकी मुखालफ़त करता हूं।"

११ मार्गशीर्ष, संवत् १७३२ तद्नुसार ११ नवंबर, १६७५ ई को गुरु जी के सामने उनके तीन सिक्खों को घोर यातनाएं देकर शहीद किया गया ताकि गुरु जी घबराकर इसलाम कबूल कर लें। माई मती दास जी को लकड़ी के दो पाटों में बांधकर आरे से चीर दिया गया। भाई दिआला जी को उबलते पानी की देग में बैठाकर शहीद कर दिया गया। भाई सती दास जी को रुई में लपेट ज़िंदा जलाकर शहीद कर दिया गया। यह सब देख गुरु जी ने अकाल पुरख का शुक्राना किया तथा अपने सिक्खों पर गर्व महसूस किया। अब गुरु जी से कहा गया कि आप करामात दिखाओ। गुरु जी ने कहा कि "क्या यह किसी करामात से कम है कि आपने लालच भी दिये और शरीर पर जुल्म भी किये फिर भी मेरे सिक्खों ने धर्म को बाखूबी निभाया!" जब गुरु जी ने उनकी कोई बात नहीं मानी तो काजी और सूबेदार ने जल्लाद को हुक्म दे दिया कि गुरु जी का सिर कलम कर दिया जाए। जल्लाद ने उनका हुक्म बजाया। गुरु जी धर्म की रक्षार्थ एवं मानव-मूल्यों की सलामती हेतु शहीद हो गये। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इस घटना को अपने लफ़्ज़ों में इस प्रकार बयान किया है :

ठीकरि फोरि दिलीसि सिरि प्रभ पुर कीया पयान ॥
तेग बहादर सी क्रिआ करी न किनहूं आन ॥
तेग बहादर के चलत भयो जगत को सोक ॥
है है है सभ जग भयो जै जै जै सुर लोक ॥१५॥५॥

(बचित्र नाटक)

सरकार की तरफ से मनाही थी कि गुरु जी का मृतक शरीर कोई नहीं ले जायेगा, लेकिन एक गुरु का सिक्ख भाई लक्खी शाह सिपाहियों को चकमा देकर गुरु जी का शरीर अपनी बैलगाड़ी में रखकर अपने घर ले गया और अंतिम संस्कार हेतु अपने घर को ही आग लगा दी। गुरु जी का शीश भाई जैता जी ने उठा लिया और लेकर श्री अनंदपुर साहिब की ओर चल दिया।

जब गुरु जी का शीश श्री अनंदपुर साहिब पहुंचा तो फिज़ा गमगीन हो गयी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी उस वक्त नौ साल के थे। गुरु जी भाई जैता जी को गले लगाकर बोले-- "रंगरेटे, गुरु के बेटे!" भाई जैता जी को गुरु जी ने बहुत प्यार दिया। उसको भाई की तरह अपने साथ रखा। अमृत की दात देकर उसका नाम 'जीवन सिंघ' रख दिया। भाई जीवन सिंघ ने भी अपना जीवन गुरु के लेखे लगा दिया। चमकौर की जंग में उसने शहादत प्राप्त की।

औरंगजेब हिंदोस्तान की ज़मीन को इसलाम की ज़मीन में बदलना चाहता था। गुरु जी का सिद्धांत धार्मिक आज़ादी था। जनेऊ व तिलक उनका धर्म नहीं था मगर उन लोगों की रक्षा के लिए गुरु जी को अपना आप न्यौछावर करना पड़ा जो इसको धारण करते थे। ध्येय मात्र किसी की धार्मिक आज़ादी को ज़िंदा रखना था। गुरु जी सदैव इंसाफ, सच्चाई, दलेरी और दियानतदारी वाला जीवन जीने की प्रेरणा देते थे। यह नियम उन्होंने अपनी ज़िंदगी में अपनाया भी और इसको निभाया भी।

गुरु जी की कुर्बानी लासानी है। धर्म की गुलामी उन्हें कबूल न थी। वे धर्म की आज़ादी के परवाने थे। प्यारे सिक्ख शहीद करवा लिये और खुद भी शहीद हो गये। अपनों के लिए तो सब मरते हैं, दूसरों के लिए कुर्बान हो जाना ही मानवता की शिखर है। 

कविताएं

प्रार्थना-- सद्भावों का करो प्रसार

भोगें सब अपने पापों को, करता हूं यह सच स्वीकार।
बुरे काम का बुरा नतीजा, सब ढोते हैं अपना भार।
लेकिन पश्चाताप हो सच्चा और तुम्हारी दया अपार।
तो न व्यापे बोझ दुक्खों का, नाव सहज में होवे पार।
अतः यही विनती है भगवन्! सद्भावों का करो प्रसार।
हृदय सभी के शुद्ध बनाकर, बसो स्वयं हे करुणागार!

सुख-दुख जीवन-सत्य है

हर जीवन संघर्ष है, कोई ज्यादा कोई कम।
हर मंज़िल की राह में, थोड़ी खुशियां, थोड़े गम।
सुख-दुख जीवन सत्य है, क्यों दुखों से हारें हम ?
मृत्यु अंतिम सत्य है, हर दुख का निकलेगा दम।
ज्ञानी वह सबसे बड़ा, जो सुख-दुख में रहता सम।
तेज-पुंज बनकर वही, जगती का हरता है तम।

-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.)। मो : ०९४११६०७६७२

तेग बहादर सी क्रिआ करी न किनहूं आन

*-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ**

नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब विनम्रता की मिसाल, समर्पण के पुंज, त्याग का सागर और सहनशीलता के स्रोत थे। श्री गुरु तेग बहादर साहिब धन्य थे जिन्होंने श्री गुरु नानक साहिब की विरासत को संभालते हुए मानवता को न केवल आशान्वित किया बल्कि गुरबाणी को शब्द-दर-शब्द सिद्ध करके दिखाया। पूर्ण विनम्रता से श्री गुरु नानक साहिब के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए एक ओर ढाका तक की लंबी यात्रायें की, श्री अनंदपुर साहिब जैसा मनोरम शहर बसाया, अमूल्य गुरबाणी की रचना की वहीं दिल्ली में अपना बलिदान देकर एक ऐसा इतिहास रच दिया जो कि अविस्मरणीय रहेगा।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के सुयोग्य सुपुत्र थे। उन्होंने धर्म-शास्त्रों की पढ़ाई के साथ-साथ शस्त्र-विद्या भी प्राप्त की और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के काल में करतारपुर के युद्ध में अपनी अपार शूरवीरता का प्रदर्शन भी किया जिससे उनके पिता-गुरु अत्यंत प्रभावित हुए थे। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की जीवन शख़्सियत का एक नमूना उनकी बाणी के अनुसार है :

पतित पुनीत दीन बंध हरि सरनि ताहि तुम आवउ ॥
गज को त्रासु मिटिओ जिह सिमरत तुम काहे बिसरावउ ॥१॥
तजि अभिमान मोह माइआ फुनि भजन राम चितु लावउ ॥
नानक कहत मुकति पंथ इहु गुरमुखि होइ तुम पावउ ॥ *(पन्ना २१९)*

उपरोक्त वचन में गुरु साहिब स्वयं समझाते हैं कि अभिमान, मोह व माया आदि सारे विकारों का त्याग करके परमात्मा की शरण में आने से ही चित्त शांत होता है और पूर्ण समर्पण व एकाग्रता से प्रभु में लीन होकर ही मुक्ति का मार्ग मिलता है :

सुरग नरक अंम्रित बिखु ए सभ तिउ कंचन अरु पैसा ॥
उसतति निंदा ए सम जा कै लोभु मोहु फुनि तैसा ॥२॥
दुखु सुखु ए बाधे जिह नाहनि तिह तुम जानउ गिआनी ॥
नानक मुकति ताहि तुम मानउ इह बिधि को जो प्रानी ॥३॥ *(पन्ना २२०)*

यह अनोखा विचार था गुरमति का कि जीवन सुख और दुख अथवा मान और अपमान में बंधकर व्यर्थ गंवा देने के लिए नहीं है। किसी की प्रशंसा हो अथवा निंदा इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, स्वर्ग या नर्क मिले यह प्रश्न नहीं है। गुरु साहिब ने कहा कि ज्ञानी वह है जो इन बंधनों से मुक्त हो चुका है और परमात्मा की शरण में आ पहुंचा है। आज तक धर्म को स्वर्ग के मार्ग और सुखों की प्राप्ति के स्रोत के रूप में देखा जाता था। परमात्मा प्रेम का विषय नहीं, कामनाओं की पूर्ति का माध्यम था। इस धारणा को तोड़ने और परमात्मा के विस्मृत हो चुके महत्त्व को स्थापित करने का काम गुरमति ने किया। यह जीवन-सोच की दिशा को मूल रूप से बदल देने वाला विचार

*ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो: ९४१५९-६०५३३

था जिसे सिक्ख गुरु साहिबान ने अपने व्यवहार द्वारा प्रमाणित भी किया और आध्यात्मिक जगत को नई पहचान भी प्रदान की। श्री गुरु तेग बहादर साहिब अपनी धर्म-यात्रा पर जब पटना साहिब पहुंचे तो उन्होंने अपने परिवार को वहीं रहने दिया और बंगाल तथा आसाम की ओर चले गये। जब सुपुत्र श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म पटना साहिब में हुआ, उस समय श्री गुरु तेग बहादर साहिब ढाका में थे। गुरु साहिब ने अपना दौरा जारी रखा क्योंकि वे तो हर्ष और शोक से ऊपर उठ चुके थे, मोह और माया के उनके बंध पहले ही कट चुके थे। ढाका के बाद वे आसाम में दो साल तक रहे। बाद में पंजाब के हालात को देखते हुए वापिस लौटने का निर्णय लिया और अपने परिवार को भी पटना साहिब से वापिस लौटने को कहा। जब गुरु साहिब अपने सुपुत्र से मिले तो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पांच वर्ष से अधिक के हो चुके थे। इकलौता सुपुत्र हो और उसका जन्म से लंबे अरसे तक मुंह तक न देख पाना निर्लिप्तता का आदर्श उदाहरण था जो इतिहास में ढूंढे नहीं मिलता। ऐसा नहीं कि उनके मन में सुपुत्र का स्वाभाविक मोह नहीं रहा होगा अथवा वे किसी पारंपरिक उत्तरदायित्व से विमुख थे। परमात्मा स्वरूप श्री गुरु तेग बहादर साहिब के हृदय में तो परमात्मा बस रहा था। इस अवस्था में उनका हृदय निर्मल ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित था। निर्मल ज्ञान का धारक मनुष्य परमात्मा के समकक्ष हो जाता है और अपनी भावनाओं को वश में करना जान जाता है। गुरु साहिब ने स्वयं निम्न वचन में इस बात को स्पष्ट किया है :

माई मै धनु पाइओ हरि नामु ॥
मनु मेरो धावन ते छूटिओ करि बैठो बिसरामु ॥१॥ रहाउ ॥
माइआ ममता तन ते भागी उपजिओ निरमल गिआनु ॥
लोभ मोह एह परसि न साकै गही भगति भगवान ॥१॥
जनम जनम का संसा चूका रतनु नामु जब पाइआ ॥
त्रिसना सकल बिनासी मन ते निज सुख माहि समाइआ ॥२॥ (पन्ना ११८६)

गुरु साहिब के अनुसार जब मन में परमात्मा प्रकट हो जाता है तो सारे उद्वेग शांत हो जाते हैं तथा सारी शंकायें नष्ट हो जाती हैं। परमात्मा का सिमरन और साथ सबसे बड़ा सुख बनकर उभरता है और यह सबसे बड़ा धन दिखने लगता है। यह तभी संभव हो पाता है कि कोई पिता अपने (नौ वर्ष के) सुपुत्र के मोह का परित्याग कर स्वयं को मानवता के हित में समर्पित कर दे। तब सारी लालसाएं मिट जाती हैं और परमात्मा का आदेश सर्वोपरि हो जाता है। परमात्मा-प्रेम में तो एक पल भी बेकार नहीं जाने देना चाहिए। गुरु साहिब को जब अवसर मिला मानवता के हित में बलिदान देने का तो उन्होंने एक पल गंवाए बिना उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। गुरु साहिब का संसार के लिए भी यही संदेश था कि एक-एक पल कीमती है क्योंकि आयु बीतती जा रही है, परमात्मा की भक्ति में चित्त न लगाना मूर्खता व अज्ञानता होगी :

चेतना है तउ चेत लै निसि दिनि मै प्रानी ॥
छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटै घट जिउ पानी ॥१॥ रहाउ ॥
हरि गुन काहि न गावही मूरख अगिआना ॥
झूठै लालचि लागि कै नहि मरनु पछाना ॥१॥
अजहू कछु बिगरिओ नही जो प्रभ गुन गावै ॥
कहु नानक तिह भजन ते निरभै पदु पावै ॥
(पन्ना ७२६)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने जीवन के सत्य को बड़े ही स्पष्ट और निर्भीक ढंग से सामने रखा कि सारे सांसारिक व्यवहार तभी तक के हैं

जब तक शरीर में प्राण हैं। इन संबंधों में बंधकर परमात्मा को विस्मृत कर देना निपट अज्ञानता है और मुक्ति प्राप्त करने के लिए जो मनुष्य-जीवन का अवसर मिला है उसे गंवा देना है। जीवन-सत्य को जानना आवश्यक है क्योंकि न जानने से पथ-भ्रष्ट होने का संकट सामने होता है। चौरासी लाख योनियों में भटकते हुए यदि जीवन-मुक्त होने की संभावना बनी है तो परमात्मा की कृपा से उसे यथार्थ में परिवर्तित कर देने में ही हित है। यह तो आनंद की ओर जाने की प्रेरणा है न कि वैराग्य का संदेश। वैराग्य तो वियोग है जबकि गुरु साहिब परमात्मा से संयोग की बात कर रहे हैं जिसमें आनंद ही आनंद है :

-सभ सुख दाता रामु है दूसर नाहिन कोइ ॥
कहु नानक सुनि रे मना तिह सिमरत गति होइ ॥९॥
जिह सिमरत गति पाईऐ तिह भजु रे तै मीत ॥
कहु नानक सुनु रे मना अउध घटत है नीत ॥
(पन्ना १४२६)

-जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥
कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुख देह ॥
(पन्ना १४२७)

-रे मन राम सिउ करि प्रीति ॥
स्रवन गोबिंद गुनु सुनउ अरु गाउ रसना गीति ॥१॥ रहाउ ॥
करि साधसंगति सिमरु माधो होहि पतित पुनीत ॥
कालु बिआलु जिउ परिओ डोलै मुखु पसारे मीत ॥१॥
(पन्ना ६३१)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी में भटके हुए मनुष्यों के लिए चिंता व शुभ भावना दोनों के प्रचुर दर्शन होते हैं। उनका आग्रह है कि सभी मनुष्य उस सुख की ओर उन्मुख हों जिसकी वे कामना कर रहे हैं, किंतु मार्ग गलत पकड़ लिया है। वे मनुष्य को उन झूठे सुखों की ओर से आगाह कर रहे हैं जो अंततः दुखों का कारण बनते हैं। मनुष्य इस बात को समझ नहीं पाता। गुरु साहिब का बार-बार मनुष्य को कुमार्ग से सचेत करना तात्कालिक सामाजिक परिस्थितियों की ओर भी इंगित करता है जो इतनी बिगड़ चुकी थीं कि उन्हें जन-चेतना हेतु अपने जीवन का बलिदान करना पड़ा। बाद में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को खालसा की साजना करके बलिदानों की परंपरा को शिखर तक ले जाने को विवश हो जाना पड़ा।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अडोल रहकर मुगल राज्य के अत्याचार सहन किये और दिल्ली में अपना बलिदान दिया। यह स्वेच्छा से दिया गया बलिदान मानव-सभ्यता के इतिहास में कभी न भूली जा सकने वाली इबारत लिख गया कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब जैसा न कोई हुआ है और न कोई होगा :

ठीकरि फोरि दिलीसि सिरि प्रभ पुर कीया पयान ॥
तेग बहादर सी क्रिआ करी न किनहूं आन ॥१५॥५॥
(बचित्र नाटक)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपनी धर्म-यात्रा के दौरान जन-जन को प्रेम का संदेश दिया और सद्भाव से रहने का सलीका सिखाया। उन्होंने कई स्थानों पर कुएं और ताल बनवाये, जिसका लोगों ने बड़ी खुशी से स्वागत किया। उनके परोपकार के कार्यों से सिक्ख धर्म का बड़ा प्रचार व प्रसार हुआ और लोग बड़ी संख्या में सिक्ख बने। जब धर्म-प्रचार का कार्य संपूर्ण हुआ तो समय की आवश्यकता के अनुरूप धर्म को अन्याय से उच्च सिद्ध करने के लिए उसे दृढ़ करने का संयोग बना। इस महान कार्य को आरंभ किया श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने अपनी शहादत देकर। उनकी शहादत की महानता अवर्णनीय है। परमात्मा अपार है और उसके प्यारे जनों की महिमा भी अपार है :

केता आखणु आखीऐ ता के अंत न जाणा ॥
(पन्ना ४२१)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत

-डॉ. नवरत्न कपूर*

भारत का छठा मुगल बादशाह औरंगज़ेब बड़ा महत्त्वाकांक्षी था। साम्राज्यवाद का भूत सवार होने पर उसने अपने पिता बादशाह शाहजहां को कैद में डाल दिया। औरंगज़ेब का बड़ा भाई दारा शिकोह उसकी महत्त्वाकांक्षा से परेशान होकर अपनी पत्नी नादिरा और छोटे पुत्र सपीहर शिकोह को साथ लेकर सिंध की ओर भाग गया। कठोर हृदय औरंगज़ेब ने अपने फौजी भेजकर दारा शिकोह और उसके पुत्र को पकड़वा कर कैद में डाल दिया। इसके बावजूद उसकी घृणा शांत न हुई और उसने दारा शिकोह और उसके बड़े बेटे सुलेमान शिकोह को कत्ल करवा दिया। औरंगज़ेब ने अपने छोटे भाई मुराद को राजगद्दी दिलवाने के झांसे दिए किंतु मौका ताककर उसने मथुरा (उत्तर प्रदेश) के समीप मुराद को एक प्रतिभोज के समय नशे में धुत्त देखकर ग्वालियर के किले में नज़रबंद कर दिया, जहां पर वह कुछ दिनों बाद संसार से चल बसा।

औरंगज़ेब कट्टर शिया मतावलंबी था। उसने बादशाह बनने पर बहुत-से सुन्नी मुसलमानों को नौकरी से निकाल दिया। उसने बीसों सूफी मुसलमान फ़कीरों की हत्या करवाई। शाहजहां के राज्यकाल के दौरान औरंगज़ेब गुजरात का सूबेदार (राज्यपाल) था। सन् १६४५ ई में उसने गुजरात के चिंतामणि मंदिर को तुड़वाकर मस्जिद बनवा दी। राजपाट मिलने पर उसने वाराणसी के विश्व-विख्यात 'विश्वनाथ मंदिर' के प्रति भी ऐसी ही घृणा दिखाई और वाराणसी में चलने वाली हिंदू पाठशालाओं को धराशायी करवाने के लिए अपने नाज़िमों (ज़िला अधिकारियों) के नाम विशेष आदेश-पत्र जारी किए।

औरंगज़ेब वाराणसी की तरह कश्मीर के हिंदू मंदिरों और पाठशालाओं के भवनों को ध्वस्त करने तथा हिंदुओं पर जज़िया थोपने का इच्छुक था। कश्मीर के सूबेदार सैफ खां जो कि औरंगज़ेब का मौसा तथा श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी का परम श्रद्धालु था, ने बादशाह की दमन-नीति का समर्थन नहीं किया। फलत: सैफ खां को कश्मीर के सूबेदार के पद से हटा दिया और सितंबर, १६७१ ई में इफ़्तार खां नामक व्यक्ति को 'शेर अफ़गान' की उपाधि देकर उसके स्थान पर नियुक्त कर दिया। बादशाह के आदेशानुसार पहले तो शेर अफ़गान ने कश्मीरी पंडितों को धन और धरती का लालच दिया और मधुर भाषा में उन्हें मुसलमान बनने के लिए प्रेरित किया किंतु जब उसकी पूरी तरह से दाल न गली तो उसने ज़ोर-ज़बरदस्ती का सहारा लिया।

मटन (कश्मीर) का निवासी पंडित कृपा राम दत्त तथा उसके प्रतिनिधि-मंडल के छिब्बर गोत्रीय ब्राह्मणों को श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब तथा श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के समय से अपने पूर्वजों के सिक्ख गुरु साहिबान के साथ घनिष्ठ संबंधों के बारे में और गुरगद्दी पर विराजमान श्री गुरु तेग बहादर साहिब के बारे में जानकारी थी। पंडित कृपा राम के नेतृत्व में यह शिष्ट-मंडल 'चक्क नानकी' (श्री अनंदपुर साहिब) पहुंचा और उसने अपनी करुण-गाथा गुरु साहिब को सुनाई। नवम् पातशाह जी सभी आगंतुकों के विचार सुनते रहे और "प्रभु कृपा करेगा", "वाहिगुरु का आसरा लो",

*१६९७, जीवन संत कॉटेज, देवान मूल-चंद स्ट्रीट, नजदीक आर्य समाज, पटियाला-१४७००१ (पंजाब)

"अपने धर्म पर अडिग रहो" जैसे शब्दों से उन्हें सांत्वना देते रहे। कानों-कान यह ख़बर माता गुजरी जी तथा उनके बेटे श्री (गुरु) गोबिंद राय जी तक भी पहुंच गई। जिज्ञासावश वे दोनों वहीं पहुंच गए। पंडित कृपा राम ने आगे बढ़कर बाल श्री (गुरु) गोबिंद राय जी को अपनी भुजाओं में भरकर अपने आसन पर बैठा लिया। तभी कुछ और दुखड़े सुनकर श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने कहा-- "औरंगज़ेब के अत्याचारों का मुकाबला करने के लिए आज किसी के बलिदान की आवश्यकता है।" तुरंत बाल श्री (गुरु) गोबिंद राय जी के मुख से अनायास निकल पड़ा-- "भला आप से बड़ा कौन परोपकारी होगा, जो अपने बलिदान से धर्म की रक्षा करने में समर्थ होगा?"

गुरु साहिब ने मासूम बाल की बात सुनकर कश्मीरी ब्राह्मणों का धर्म बचाने का मन बना लिया। एतद्‌र्थ 'शहीद बिलास भाई मनी सिंघ' के लेखक भाई सेवा सिंघ के मनोहर वचन उद्‌धृत हैं :

हिंद विखै अंध घोर मचियो जब,
साधू संत नहि देखन पावत।
धरम दी थां अधरम होवै,
नही रच्छक गऊ गरीब दिखावत।
तब तेग बहादर "हिंद की चादर,"
थे "चक्क नानकी" बीच बतावत।
सेवा हरि इस घोर कलू महि,
गुरू जंञू की लाज रखावत।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने कश्मीरी पंडितों से कहा कि आप औरंगज़ेब के पास संदेश भिजवा दें कि वो श्री गुरु नानक देव जी के जानशीन (उत्तराधिकारी, श्री गुरु तेग बहादर साहिब) को मुसलमान बना ले तो वे लोग भी बिना किसी झिझक से इसलाम स्वीकार कर लेंगे।

पंडितों ने एक पत्र में यह बात लिखकर लाहौर के सूबेदार के पास भिजवा दी और उसने उसे मूल रूप में बादशाह औरंगज़ेब के पास प्रेषित कर दिया। पत्र पढ़कर औरंगज़ेब ने काज़ियों के साथ विचार-विमर्श करके अपने विशेष संदेशवाहक घुड़सवार (अहदी) को श्री अनंदपुर साहिब भेजा। गुरु साहिब के मधुर वचनों से प्रभावित होकर अहदी विदा हुआ। गुरु साहिब ने तुरंत दिल्ली चलने की तैयारी कर ली। ऐसा देखकर गुरु साहिब के बहुत-से श्रद्धालु उनके साथ चलने के लिए तत्पर हो गए। त्रिकालदर्शी (भूत, वर्तमान और भविष्य का ज्ञाता) गुरु साहिब ने पृथ्वी पर तीन लकीरें खींचकर कहा कि केवल तीन व्यक्ति ही मेरा साथ देंगे और अन्य श्री गुरु गोबिंद राय जी की सेवा में रहेंगे। गुरु साहिब के इस धर्म-रक्षक अभियान में सहयोगी बनने वाले तीन महानुभावों का उल्लेख 'भट्ट वही मुलतानी सिंधी' में इस प्रकार हुआ है :-

"दिआल दास बेटा भाई दास का, पोता बालू का, पड़पोता मूले का गुरु गैल मग्घर सुदी पंचमी, संमत १७३२ दिल्ली चांदनी चौंक के महान, शाही हुक्म गैल मारा गया । गोलो मती दास, सती दास बेटे हरि नंद के, पोते लखी दास के, पड़पोते परागा के, सरस्वती भागवत गोतर ब्राह्मण छिबर मारे गए।"

इसी आधार पर इतिहासकारों ने भाई मती दास जी, भाई सती दास जी तथा भाई दिआला जी का जीवन-परिचय और सिक्ख गुरुओं के साथ उनके पुराने संबंधों का ब्योरा इस प्रकार एकत्र किया है :

भाई मती दास जी और भाई सती दास जी : आप दोनों का जन्म ज़िला जेहलम के करिआला नामक ग्राम में छिब्बर गोत्र के परिवार में हुआ था। आप दोनों के पिता का नाम भाई हीरा नंद, दादा का नाम भाई लक्खी दास और पड़दादा का नाम भाई परागा जी था। भाई परागा जी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की सेना में भर्ती हुए। सन् १६२८ ई में हुए श्री अमृतसर के युद्ध में भाई

परागा जी मुगल सेनानायक मुखलिस खां के साथ लड़ते हुए शहीद हो गए थे। इन दोनों भाइयों के पिता भाई हीरा नंद श्री गुरु हरिराय साहिब के श्रद्धालु थे। सन् १६५७ ई. में अपने निधन से पूर्व ही उन्होंने इन्हें गुरु साहिब की सेवा के लिए भेज दिया था। इन दोनों महानुभावों के चाचा भाई दुर्गा मल श्री गुरु हरिराय साहिब तथा श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के दीवान थे। भाई दुर्गा मल ने अपने परलोक गमन से पूर्व श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को प्रार्थना करके भाई मती दास को गुरु-घर का दीवान और भाई सती दास को उनके वज़ीर (मंत्री) का पद दिलवा दिया था।

भाई दिआल दास जी : इनका जन्म अलीपुर (ज़िला मुलतान) में हुआ था। इनके पिता का नाम भाई माई दास, दादा का नाम भाई खान तथा पड़दादा का नाम भाई मूला था। भाई मूला जी के पिता भाई बालू जी, भाई मती दास जी और भाई सती दास जी के पड़दादा भाई परागा जी के साथ श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की सेना में भर्ती थे और वे भी श्री अमृतसर वाले युद्ध में चब्बे-संगराणा साहिब के मैदान में विरोधियों के साथ लड़ते हुए शहीद हो गए थे। भाई दिआल दास जी समेत भाई माई दास के ग्यारह पुत्र थे। भाई मती दास जी और भाई सती दास जी के चाचा भाई दुर्गा मल की प्रार्थना के आधार पर श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने भाई दिआल दास जी को अपने गृह-कार्य की सेवा सौंप दी थी।

गुरु साहिब की शहादत : श्री गुरु तेग बहादर साहिब उपर्युक्त तीनों सिक्खों को ११ जुलाई, सन् १६७५ ई को साथ लेकर श्री अनंदपुर साहिब से प्रस्थान करके पहले सैफाबाद (बहादुरगढ़) पहुंचे। वहां से समाणा, करहाली, चीका गिलोरा और जींद के मार्ग से आगरा पहुंचे। वहां आपने एक बाग में डेरा लगाया। इसी दौरान एक अयाली बाबा हसन अली द्वारा नाटकीय ढंग से गुरु साहिब और उनके तीनों साथियों को गिरफ्तार कर लिया गया। आगरा के कोतवाल ने बादशाह औरंगज़ेब को गुरु महाराज और उनके साथियों के गिरफ्तार किए जाने की सूचना दी। बादशाह ने अपने एक सरदार को आगरा भेजकर चारों को दिल्ली बुलाकर कैद में डाल दिया। कारावास में औरंगज़ेब के कुछ सिपाही गुरु जी को इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिए प्रलोभन देते तो कई एक उन्हें करामातें दिखाने के लिए विवश करते। 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' के लेखक ने उनके विनम्र उत्तर के संदर्भ में लिखा है :

करामात को नाम कहर है।
करहि न संत समान सिहर है।. . .
निज निज धरम सभन को पिआरे।
जो जिस धारत सो तिस तारे।

जब गुरु साहिब अपने सत्य-मार्ग से टस से मस न हुए तो औरंगज़ेब ने उन्हें अपने दरबार में बुलाकर प्रस्ताव रखा कि या मुसलमान बन जाओ नहीं तो मृत्यु के लिए तैयार हो जाओ। गुरु साहिब ने धर्म-परिवर्तन वाली बात ठुकरा दी। फलतः उन्हें दिल्ली के चांदनी चौंक की कोतवाली में लाया गया। वहां पर गुरु साहिब को भयभीत करने के लिए पहले भाई मती दास जी को लकड़ी के दो बड़े टुकड़ों में कसकर आरे से चीर शहीद कर दिया गया। फिर भाई दिआल दास जी को पानी के उबलते कड़ाहे में बैठाकर शहीद कर दिया गया। उसके बाद भाई सती दास जी के शरीर को रूई में लपेटा गया और तीली दिखाकर उन्हें ज़िंदा जला शहीद कर दिया गया। अगले दिन गुरु साहिब का शीश धड़ से अलग करके उन्हें शहीद कर दिया गया। मानव धर्म की सेवा के लिए गुरु साहिब ने ११ नवंबर, सन् १६७५ ई को अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे।



भक्त नामदेव जी की बाणी : विषय-वस्तु एवं विचारधारा

-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'*

हिंदी साहित्य के इतिहास को विभिन्न कालों में विभाजित किया गया है, जिनमें से भक्ति काल को सर्वश्रेष्ठ काल माना जाता है। इसे 'संत काल' भी कहा जाता है। इस काल में दो तरह की उपासना पद्धति यानि भक्ति लहर प्रचलित थी-- सगुण भक्ति पद्धति तथा निर्गुण भक्ति पद्धति। सगुण भक्ति पद्धति में मूर्ति-पूजा, कर्मकांड, व्रत, अनेक तरह की पूजा-विधियां आदि शामिल होती हैं और प्रभु-स्वरूप को साकार माना जाता है। निर्गुण उपासना की पद्धति प्रभु स्वरूप को निराकार स्वरूप में स्वीकार करती है। यह पद्धति कर्मकांडों, भ्रमों, पाखंडों, आडंबरों, व्रत, जप-तप, तीर्थाटन आदि का खंडन करती है। निर्गुण उपासना पद्धति प्रभु का नाम-सिमरन करने को प्रेरित करती है। भक्त नामदेव जी भी अपनी पैतृक परंपरा के कारण सगुण भक्ति में तल्लीन रहा करते थे। जीवन में कुछ ऐसी घटनाएं घटित हुईं कि उनका सगुण भक्ति से मोह भंग हो गया और वे निर्गुण भक्ति में प्रवृत्त हुए।

ब्रह्मज्ञानी, महान् भक्त, श्रेष्ठ संगीतकार, महान् दार्शनिक, समाज सुधारक भक्त नामदेव जी का जन्म २६ अक्तूबर, १२७० ई को पिता श्री दम सेती (दामशेट) जी के गृह में माता श्री गोनाबाई जी की कोख से महाराष्ट्र के ज़िला सतारा के गांव नरसी बामनी में हुआ था। आप बचपन से ही साधु-स्वभाव के थे; संतजनों की सेवा को तत्पर रहते थे। इनकी अवस्था एक वैरागी की अवस्था जैसी थी। इनका विवाह श्री गोबिंद शेट की सुपुत्री माता राजाबाई (राजाई जी) के साथ हुआ। इनके गृह में चार पुत्रों-- नारायण, महादेव, गोविंद, विट्ठल तथा एक पुत्री लिंबाबाई ने जन्म लिया।

प्रभु-भक्ति में मग्न रहने के कारण अनेक लोग इनके श्रद्धालु बन गए। अनेक चमत्कारी गाथाएं इनके नाम के साथ जुड़ गईं, जैसे विसेबा खेचर को गुरु धारण करने की गाथा, मूर्ति को दूध पिलाने, देहरे के घूमने की गाथा इत्यादि।

भक्त नामदेव जी ने मराठी, राजस्थानी, खड़ी बोली, पंजाबी मिश्रित भाषाओं से संबंधित शबदों की रचना की। १८ रागों में रचित ६१ शबदों को पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संपादन के समय अन्य भक्त साहिबान की बाणी के साथ बिना किसी भेदभाव के शामिल कर लिया। भक्त नामदेव जी की बाणी दुनिया के भूले-भटके लोगों को मार्गदर्शन देते हुए अकाल पुरख के साथ जोड़ती है; जीवन को उचित व सही ढंग से जीने की प्रेरणा देती है; बुरे रीति-रिवाजों को त्यागने हेतु फ़रमाती है; अकाल पुरख की रज़ा में राज़ी रहने के लिए कहती है। इनकी बाणी जात-पात, ऊंच-नीच के भेदभाव का खंडन करती है। भक्त नामदेव जी की विचारधारा बिल्कुल स्पष्ट, सहज व सरल है; आम लोगों का कल्याण करने वाली विचारधारा है। इन्होंने वारकारी संप्रदाय को त्यागकर विट्ठुल (प्रभु) की प्रेम-भक्ति को अपनाया था। उन्होंने प्रभु के नाम-सिमरन को ही नि:सहायों का सहारा और सर्वोत्तम धर्म माना है :

हरि हरि करत मिटे सभि भरमा ॥
हरि को नामु लै ऊतम धरमा ॥
हरि हरि करत जाति कुल हरी ॥
सो हरि अंधुले की लाकरी ॥ . . .
प्रणवै नामा ऐसो हरी ॥

*बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो. ९८७२२-५४९९०

जासु जपत भै अपदा टरी ॥ (पन्ना ८७४)

भक्त नामदेव जी ने मूर्ति-पूजा को निरर्थक बताया है; प्रभु की भक्ति को, अंत:साधना को उत्तम माना है :

-पांडे तुमरी गाइत्री लोधे का खेतु खाती थी ॥
लै करि ठेगा टगरी तोरी लांगत लांगत जाती थी ॥
पांडे तुमरा महादेउ धउले बलद चड़िआ आवतु देखिआ था ॥ (पन्ना ८७४)

-हिंदू अंन्हा तुरकू काणा ॥
दुहां ते गिआनी सिआणा ॥
हिंदू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीति ॥
नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति ॥ (पन्ना ८७५)

भक्त नामदेव जी फ़रमाते हैं कि जो सच्चा भक्त आजीवन प्रभु के नाम-सिमरन में लगा रहता है, उसका जीवन सफल हो जाता है :

सफल जनमु मो कउ गुर कीना ॥
दुख बिसारि सुख अंतरि लीना ॥
गिआन अंजनु मो कउ गुरि दीना ॥
राम नाम बिनु जीवनु मन हीना ॥१॥रहाउ॥
नामदेइ सिमरनु करि जानां ॥
जगजीवन सिउ जीउ समानां ॥ (पन्ना ८५७)

भक्त नामदेव जी अकाल पुरख के प्रति गहरी आस्था और विश्वास रखते थे :

मारवाड़ि जैसे नीरु बालहा बेलि बालहा करहला ॥
जिउ कुरंक निसि नादु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥१॥
तेरा नामु रूड़ो रूपु रूड़ो अति रंग रूड़ो मेरो रामईआ ॥ (पन्ना ६९३)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सुशोभित भक्त नामदेव जी के शबदों में अकाल पुरख के निराकार व निर्गुण स्वरूप की आराधना की गई है। पूजा-अर्चना के आडंबरों, बाहरी अवदानों को व्यर्थ बताया गया है :

आनीले कुंभ भराईले ऊदक ठाकुर कउ इसनानु करउ ॥
बइआलीस लख जी जल महि होते बीठलु भैला काइ करउ ॥१॥
जत्र जाउ तत बीठलु भैला ॥
महा अनंद करे सद केला ॥१॥ रहाउ ॥
आनीले फूल परोईले माला ठाकुर की हउ पूज करउ ॥
पहिले बासु लई है भवरह बीठल भैला काइ करउ ॥२॥
आनीले दूधु रीधाईले खीरं ठाकुर कउ नैवेदु करउ ॥
पहिले दूधु बिटारिओ बछरै बीठलु भैला काइ करउ ॥३॥
ईभै बीठलु ऊभै बीठलु बीठल बिनु संसारु नही ॥
थान थनंतरि नामा प्रणवै पूरि रहिओ तूं सरब मही ॥४॥ (पन्ना ४८५)

भक्त नामदेव जी कहते हैं कि भगवान् यहां भी है, वहां भी है। सब जगह वह विद्यमान है। सभी प्राणियों में वह रचा-बसा हुआ है। भक्त नामदेव जी ने तंत्र-मंत्र-विद्या तथा आडंबरों से लोगों का ध्यान, विश्वास हटाया। परम पिता परमात्मा की परम सत्ता और आलौकिक शक्ति के प्रति लोगों की भक्ति एवं विश्वास को सुदृढ़ किया। उन्हें भक्ति का उचित मार्ग दिखाया। प्रभु-मिलन का आसान ढंग बतलाया। शिरोमणि कवि, शिरोमणि भक्त, युगदृष्टा, महान् समाज सुधारक, पाखंडों का खंडन करने वाले भक्त नामदेव जी ने फ़रमाया कि जिस (भक्त) के पास प्रभु-नाम का उपहार होता है, वह केवल सांसारिक इच्छाओं को त्यागने में ही सफल नहीं होता है; बल्कि भवसागर (मोह-माया का सागर) से पार जाने में भी समर्थ हो जाता है :

सिमरि सिमरि गोबिंदं ॥
भजु नामा तरसि भव सिंधं ॥ (पन्ना ८७३)

भक्त नामदेव जी की बाणी में लोक-कल्याण, समाज-सुधार, सच्चे मार्गदर्शन की भावना विद्यमान है जो समाज में से भेदभाव, छुआ-छूत, जात-पात, ऊंच-नीच खत्म करने की प्रेरणा व शक्ति देती है।



ऐसी नामे प्रीति नाराइण

*-स. गुरदीप सिंघ**

भक्त नामदेव जी का जन्म गांव नरसी बामनी, ज़िला सतारा (महाराष्ट्र) में कार्तिक सुदी ११ संवत् १३२७ बिक्रमी (१२७० ई) को हुआ। आपकी माता का नाम श्री गोना बाई और पिता का नाम श्री दम सेती (दाम शेट) जी था। आपका व्यवसाय कपड़ों की धुलाई करना और उन पर छपाई करना था। भक्त नामदेव जी का विवाह माता राज बाई (राजाई जी) के साथ हुआ था।

भाई गुरदास जी के अनुसार भक्त नामदेव जी तथाकथित छीपा (छींबा) जाति से संबंधित थे। उन्होंने प्रेम भक्ति से परमात्मा के साथ अपनी सुरति जोड़ ली। एक दिन तथाकथित ऊंची जाति के व्यक्ति (क्षत्रिय और ब्राह्मण) देहरा (मंदिर) में प्रभु का यश-गान कर रहे थे। भक्त नामदेव भी उनके साथ जाकर बैठ गए। उन्होंने भक्त जी को पकड़कर संगत में से उठा दिया। भक्त नामदेव जी उस देहरे के बाहर बैठकर नाम-सिमरन करने लगे। भक्त जी ने दिखा दिया कि प्रभु-नाम-सिमरन करने पर किसी का विशेषाधिकार नहीं है। नाम-सिमरन कहीं पर भी, किसी भी हाल में किया जा सकता है। प्रभु की दरगाह में तो नाम-सिमरन करने वाले को ही सम्मान मिलता है :

नामा छींबा आखीऐ गुरमुखि भाइ भगति लिव लाई।
खत्री ब्राहमण देहुरै उतम जाति करनि वडिआई।
नामा पकड़ि उठालिआ बहि पिछवाड़ै हरि गुण गाई।
भगत वछलु आखाइदा फेरि देहुरा पैजि रखाई।
दरगह माणु निमाणिआ साधसंगति सतिगुर सरणाई।
ऊतमु पदवी नीच जाति चारे वरण पए पगि आई।
जिऊ नीवानि नीरु चलि जाई॥ (वार २५:४)

उस समय मुहम्मद-बिन-तुगलक दिल्ली का बादशाह था। वह इसलाम धर्म का प्रचारक था। जब उसे पता चला कि भक्त नामदेव जी पर भगवान की विशेष कृपा है तो बादशाह ने उसे किले में बुला लिया और कहा, मैंने सुना है कि परमात्मा आपकी बात मानता है। आप भगवान से कहिए कि इस मरी हुई गाय को जीवित कर दे। भक्त नामदेव जी ने बादशाह की बात का उत्तर देते हुए कहा कि "ऐसा नहीं हो सकता। कभी कोई मरा हुआ जीवित नहीं होता। वैसा ही होता है जो परमात्मा करता है। मेरे करने से कुछ नहीं होगा। जन्म-मरण परमात्मा के वश में है।" भक्त नामदेव जी ने बादशाह को ज्ञान का उपदेश दिया :

सुलतानु पूछै सुनु बे नामा ॥
देखउ राम तुम्हारे कामा ॥१॥
नामा सुलताने बाधिला ॥
देखउ तेरा हरि बीठुला ॥१॥ रहाउ ॥
बिसमिलि गऊ देहु जीवाइ ॥
नातरु गरदनि मारउ ठांइ ॥२॥
बादिसाह ऐसी किउ होइ ॥
बिसमिलि कीआ न जीवै कोइ ॥३॥

***३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; मो: ९८८८१२६६९०*

मेरा कीआ कछू न होइ ॥
करि है रामु होइ है सोइ ॥४॥ (पन्ना ११६५)

भक्त नामदेव जी की चारों तरफ होने वाली शोभा को सुनकर उनके निंदकों को बड़ा दुख हुआ। जानने वाले जान गए थे कि भक्त नामदेव जी और प्रभु में कोई भेद नहीं रहा :

नामे की कीरति रही संसारि ॥
भगत जनां ले उधरिआ पारि ॥२७॥
सगल कलेस निंदक भइआ खेदु ॥
नामे नाराइन नाही भेदु ॥२८॥ (पन्ना ११६६)

पंढरपुर के पास नदी बहती है। इस नदी के किनारे भक्त नामदेव जी जाकर बैठते और परमात्मा की भक्ति करते। एक दिन इनका ध्यान प्रभु-चिंतन में लगा हुआ था कि किसी ने आकर कहा, "हे भक्त जी! आपके घर को आग लग गई है। सारा घर जल रहा है, आप जल्दी चलो।" भक्त जी का विनम्र उत्तर था कि "घर मेरा नहीं परमात्मा का है। वो चाहे घर को रखे या जला दे, उसकी मर्ज़ी।" इस प्रसंग से सिद्ध होता है कि भक्त नामदेव जी सांसारिक मोह-माया से निर्लिप्त थे।

भक्त नामदेव जी फरमान करते हैं कि मेरी परमात्मा के साथ ऐसी प्रीति है जैसी भूखे की अन्न के साथ होती है; प्यासे की पानी के साथ होती है; कामी पुरुष की पराई औरत के साथ होती है; लालची इंसान की दौलत के साथ होती है :

जैसी भूखे प्रीति अनाज ॥
त्रिखावंत जल सेती काज ॥
जैसी मूड़ कुटंब पराइण ॥
ऐसी नामे प्रीति नराइण ॥१॥
नामे प्रीति नाराइण लागी ॥
सहज सुभाइ भइओ बैरागी ॥१॥ रहाउ ॥
जैसी पर पुरखा रत नारी ॥
लोभी नरु धन का हितकारी ॥
कामी पुरख कामनी पिआरी ॥
ऐसी नामे प्रीति मुरारी ॥२॥ (पन्ना ११६४)

भक्त नामदेव जी का कहना है कि जिस प्रकार बछड़े से बिछुड़कर गाय अकेली है, उसी प्रकार प्रभु से बिछड़कर मुझे तड़फड़ाहट होती है; जिस प्रकार पानी बिना मछली व्याकुल होती है, उसी प्रकार मैं (भक्त नामदेव जी) प्रभु के नाम के बिना व्याकुल हो जाता हूं :

मोहि लागती तालाबेली ॥
बछरे बिनु गाइ अकेली ॥१॥
पानीआ बिनु मीनु तलफै ॥
ऐसे राम नामा बिनु बापुरो नामा ॥१॥ रहाउ ॥
जैसे गाइ का बाछा छूटला ॥
थन चोखता माखनु घूटला ॥२॥
नामदेउ नाराइनु पाइआ ॥
गुरु भेटत अलखु लखाइआ ॥३॥ (पन्ना ८७४)

८० वर्ष की आयु में १४०७ बिक्रमी में भक्त नामदेव जी परलोक गमन कर गए।



श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बाईस वारें व नौ धुनियां

*-सिमरजीत सिंघ**

गतांक से आगे . . .

धुनियां : धुनी शब्द की पृष्ठभूमि 'धवनी' शब्द से जुड़ी मानी जाती है, जिससे अभिप्राय है-- नाद या आवाज़। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इस शब्द का प्रयोग विशेष संकेत के लिए किया गया है, जिससे अभिप्राय है गाने की धारणा या विधि। श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना करते समय जहां बाणी को रागों के अनुसार संकलित किया है वहीं श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज नौ वारों को गाने के लिए लोक-काव्य गाने की परंपरा में प्राचीन लोक-वारों की धुनियों की ओर भी संकेत किया है। ऐसे संकेत मात्र नौ वारों में ही मिलते हैं।

जो कहानियां इन वारों के साथ जुड़ी हुई हैं उनका गुरबाणी के साथ कोई सम्बंध नहीं है। श्री गुरु अरजन देव जी ने इन धुनियों को उस समय लोगों में प्रचलित होने के कारण तथा लोगों की पसंदीदा होने के कारण लोगों के मन पर सीधा असर करने के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज वारों को इन धुनियों में गाने का आदेश दिया है।

इन नौ वारों का विवरण इस प्रकार है :

१. वार माझ की तथा सलोक महला १ : मलक मुरीद तथा चंद्रहड़ा की धुनी गावणी

२. गउड़ी की वार महला ५ : राइ कमालदी मोजदी की वार की धुनि उपरि गावणी

३. आसा महला १ : वार सलोका नालि सलोक भी महले पहिले के लिखे-टुंडे अस राजै की धुनी

४. गूजरी की वार महला ३ : सिकंदर बिराहिम की धुनि गाउणी

५. वडहंस की वार महला ४ : ललां बहलीमा की धुनि गावणी

६. रामकली की वार महला ३ : जोधै वीरै पूरबाणी की धुनी

७. सारंग की वार महला ४ : राइ महमे हसने की धुनि

८. वार मलार की महला १ : राणे कैलास तथा मालदे की धुनि

९. कानड़े की वार महला ४ : मूसे की वार की धुनी

१. मलक मुरीद तथा चंद्रहड़ा सोहीआ की धुनी : श्री गुरु अरजन देव जी ने माझ की वार महला १ को इस धुन पर गाने का आदेश दिया है। 'मुरीद' तथा 'चंद्रहड़ा' अकबर के दो राजपूत फौजी थे। मुरीद को मलक का ख़िताब मिला हुआ था, इस कारण उसे मलक मुरीद कहा जाता था। चंद्रहड़ा की जद्द का नाम सोहीआ था, इसलिए चंद्रहड़ा सोहीआ के नाम से प्रसिद्ध था। ऊपर से ये दोनों दोस्त थे परंतु मन से एक-दूसरे से शत्रुता रखते थे।

एक बार सरहद पर बगावत हो गई। अकबर ने बागियों को सोधने व उनसे जुर्माना तथा कर वसूल करने के लिए मलक मुरीद को भेजा। मलक मुरीद बहुत बहादुर शूरवीर था। उसका नाम सुनते ही बागियों ने हथियार फेंक दिए और जुर्माना अदा कर दिया परंतु कर के लिए कुछ समय मांगा। जुर्माने का रुपया अकबर को दिल्ली भेज दिया। बागियों को सोधने

*संपादक, गुरमति ज्ञान एवं गुरमति प्रकाश।

व कर वसूल करने के लिए वह वहीं ठहर गया।

कुछ समय बीत गया। मलक मुरीद इतना व्यस्त हो गया कि समय पर कर वसूल करके दिल्ली न भेज सका। चंद्रहड़ा सोहीआ ने मौका पाकर अकबर के दरबार में झूठी ख़बर फैला दी कि मलक मुरीद बागियों के साथ मिल गया है। अकबर ने एक बड़ी फौज देकर मलक मुरीद को सोधने के लिए भेज दिया।

चंद्रहड़ा की चाल की ख़बर मलक मुरीद को अपने गुप्तचरों द्वारा मिल गई थी। दोनों दलों में रक्त-रंजित युद्ध हुआ। अनेकों सिपाही मारे गए। जानी एवं माली काफी नुकसान हो जाने के कारण चंद्रहड़ा ने मलक मुरीद को चिट्ठी लिखी कि इस तरह सिपाहियों को मरवाने का कोई लाभ नहीं, दुश्मनी हमारी है, इस लिए हम दो-हाथ करें।

अगले दिन मलक मुरीद व चंद्रहड़ा सोहीआ अकेले ही मैदान में उतरे। शस्त्र-विद्या में निपुण होने के कारण दोनों ने अच्छे कौतुक दिखाए। काफी देर तक लड़ते रहे। अंत में इतने ज़ख्मी हो गए कि दोनों ने प्राण त्याग दिए। विजय-पराजय किसी की भी न हुई। ढाडियों ने इनकी बहादुरी की स्तुति इस वार में रचित की जिसकी एक प्रसिद्ध पउड़ी इस प्रकार है :

काबुल विच मुरीद खां फड़िआ बड जौर।
चंद्रहड़ा लै फौज को चढ़िआ बड तौर।
दोहां कंधारां मूंह जुड़े दंमामे दौर।
शसत्र पजूते सूरिआं सिर बद्धे टौर।
होली खेलें चंद्रहड़ा रंग लगे सौर।
दोवें तरफां जुट्टीआं सर वगन कौर।
मैं भी राइ सदाइसां वड़िआ लाहौर।
दोनों सूरे साहमणे जूझे उस ठौर।

श्री गुरु अरजन देव जी ने देखा कि यह आठ-तुकी पउड़ी श्री गुरु नानक देव जी की वार माझ का ही वज़न है, जो देश में मलक मुरीद वाली वार का है परंतु मलक मुरीद वाली वार के साथ बाणी का कोई सम्बंध नहीं है। श्री गुरु अरजन देव जी ने यह धुनी लिखकर हुक्म किया है कि वार माझ को इस धारणा पर गाना है :

तूं करता पुरखु अगंमु है आपि स्रिसटि उपाती ॥
(पन्ना १३८)

२. राइ कमालदी मौजदी की वार : श्री गुरु अरजन देव जी ने अपनी उच्चारित की बाणी 'गउड़ी की वार महला ५' को इस धुन पर गाने का आदेश किया है। राइ सारंग व राइ कमालदी (कमालदीन) दो सगे भाई थे, जो बारा देश के सरदार थे। राइ कमालदी जो छोटा था, बड़े भाई की जागीर-जायदाद पर कब्ज़ा करना चाहता था। उसने राइ सारंग के विरुद्ध बगावत की झूठी ख़बर उड़ा दी। उस देश के राजा ने बिना कुछ सोचे-समझे तथा बिना कोई जांच-पड़ताल किए राइ सारंग को बंदी बना लिया। इस तरह राइ कमालदी ने सारंग की सारी जायदाद पर कब्ज़ा कर लिया।

कुछ समय बाद राजा को वास्तविकता का पता चला। उसने सारंग को निर्दोष जानकर बहुत सम्मान सहित रिहा कर दिया। इधर राइ कमालदी बड़े भाई की जायदाद वापिस नहीं करना चाहता था। उसने भाई की रिहाई का बहाना बनाकर अपने भाई सारंग को धोखे से शराब में ज़हर पिलाकर मरवा दिया।

सारंग की पत्नी अपने पुत्र मौजदी (मुअज्जदीन) को लेकर अपने मायके चली गई। मौजदी को शस्त्र-विद्या में प्रवीण किया गया। जब मौजदी जवान हुआ उसने अपने ननिहाल की फौज लेकर अपने चाचा को युद्ध के लिए ललकारा। चाचे-भतीजे में घमासान युद्ध हुआ।

मौजदी इतनी बहादुरी से लड़ा कि राइ कमालदी को संसार त्यागना पड़ा।

ढाडियों ने इस युद्ध के बारे में एक वार लिखी जिसकी एक पउड़ी इस प्रकार है :

राणा राइ कमालदी रण भारा बाही।
मौजदी तलवंडीओं चढ़िआ साबाही।
ढाली अंबर छाइआ फुले अक्क काही।
जुट्टे आहमो साहमणे नेज़े झुलकाही।
मौजे घर वधाईआं घर चाचे धाही।

इस वार की धुनी पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज श्री गुरु अरजन देव जी की उच्चारण की गई बाणी 'गउड़ी की वार' को गाने की हिदायत की गई है :

जो तुधु भावै सो भला सचु तेरा भाणा ॥
(पन्ना ३१८)

३. टुंडे असराजै की वार : लोक-वार के अनुसार राजा सारंग के पुत्र असराजे को उसके सौतेले भाइयों सरदूल राए तथा सुलतान ख़ान ने मारने के लिए हाथ काटकर अंधे कुएं में फेंक दिया तथा अफवाह फैला दी कि उसको शेर खा गया है। बनजारों का एक काफिला उस कुएं के पास से गुज़र रहा था। उन्होंने कुएं में से आवाज़ सुनकर असराजे को बाहर निकाला तथा अपने साथ ले गए। वो काफिला जिस नगर में पहुंचा उस नगर का राजा नि:संतान ही मर गया था। सुबह सबसे पहले नगर में प्रवेश करने की शर्त को संयोगवश पूरा करने के कारण वज़ीरों ने असराजे को गद्दी पर बिठा दिया। असराजे ने पूरी तरह शक्ति इकट्ठी की तथा बदला लेने हेतु अपने भाइयों पर हमला कर अपना राज्य प्राप्त कर लिया। इससे प्रभावित होकर ढाडियों ने उसकी वीरता की कहानी को वारों द्वारा रचित किया। इसकी बानगी इस प्रकार है :

भबकिआ शेर सरदूल राइ रण मारू बज्जे।
सुलतान खान बड सूरमे विच रण दे गज्जे।
खत लिखे टुंडे असराज नूं पतशाही अज्जे।
टिक्का सारंग बाप ने दित्ता भर लज्जे।
फते पाई असराज जी साही पर सज्जे।

आसा वार में श्री गुरु नानक देव जी द्वारा रचित वार को श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज करते समय यह आदेश किया कि इस वार को टुंडे असराजे की वार की धुनी पर गायन किया जाए। 'आसा की वार' की पउड़ी इस तरह है :

आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ॥
(पन्ना ४६३)

४. सिकंदर बिराहिम की वार : सिकंदर तथा बिराहिम (इब्राहीम) दो राजपूत छोटी-छोटी रियासतों के राजा थे। दोनों शरीके में से भाई थे। बिराहिम ऐशप्रस्त तथा कामी स्वभाव का था जिस कारण उसका ज्यादा समय रंगरलियां मनाने में ही गुज़रता था। एक दिन उसकी नज़र एक ब्राह्मण की सुंदर तथा नवविवाहित स्त्री पर पड़ी जिस पर वो मोहित हो गया। उसने ब्राह्मण के नाम तथा ठिकाने का पता किया तथा अहिलकारों को साथ लेकर उस औरत पर कब्ज़ा कर लिया और उसे अपने महलों में ले आया।

ब्राह्मण ने सिकंदर से मदद मांगी। सिकंदर ने बिराहिम को ब्राह्मण की स्त्री वापिस करने के लिए कहा परंतु उसने कोई परवाह न की। सिकंदर फौज लेकर बिराहिम को सोधने के लिए उसके इलाके में आ पहुंचा। दोनों दलों में खूब लड़ाई हुई। सिकंदर ने अपनी बहादुरी के जौहर दिखाते हुए बिराहिम को थोड़ी देर में ही बंदी बना लिया तथा ब्राह्मणी को ब्राह्मण के पास पहुंचा दिया। बिराहिम ने अपनी भूल बख़्शा ली तथा अपना जीवन सुधारने का प्रण किया। सिकंदर ने उसका राज्य वापिस कर दिया। किसी ढाडी

ने इस लड़ाई सम्बंधी वार लिखी जो बहुत प्रसिद्ध हुई, जिसकी पउड़ियां इस प्रकार हैं :

सिकंदर कहे बिराहिम नूं, इक गल है भाई।
तेरी साडी रण विच, अज्ज पई लड़ाई।
तू नाहीं कि मैं नाहीं, इह हुंदी आई।
राजपूती जाती नस्सिआ, रण लाज मराही।
लड़ीए आहमो-साहमणे, जो करे सो साईं।

इस पांच-तुकी पउड़ी की धुनी पर श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु अमरदास जी द्वारा रचित 'गूजरी की वार' को गाने की हिदायत की है, जिसकी पउड़ी इस तरह शुरू होती है :

आपणा आपु उपाइओनु तदहु होरु न कोई ॥
(पन्ना ५०९)

५. ललां बहलीमा की वार : लोक-रिवायत के अनुसार ललां एवं बहलीम नामक दो जागीरदार कांगड़ा क्षेत्र में रहते थे। दोनों का आपस में बहुत प्रेम था। ललां शुष्क क्षेत्र का मालिक था और उसकी फसलें बारिश पर निर्भर थीं। बहलीम के क्षेत्र में सारा साल बहने वाली कूल्ह के होने के कारण धरती बहुत उपजाऊ थी। एक साल बारिश न होने के कारण ललां के क्षेत्र में अन्न पैदा होने की कोई उम्मीद न रही। उसने सूखे से बचने के लिए अपने मित्र बहलीम से सहायता के लिए विनती की तथा इस शर्त पर कि कूल्ह से पानी लाकर जब खेती तैयार हो जाएगी तो उसका छठा हिस्सा बहलीम को देगा। जब फसल पक गई तो वह वादे से मुकर गया। इस कारण दोनों में लड़ाई हुई जिसमें ललां मारा गया तथा बहलीम ने अपनी शर्त पूरी कर ली। इस साके को किसी ढाडी ने वार में बांधा है। यह वार वादा-खिलाफ़ी करने वाले को सज़ा दिलाने सम्बंधी होने के कारण बहुत प्रसिद्ध हुई। इसकी बानगी इस प्रकार है :

काल लला दे देस का, खोइआ बहिलीमा।
हिस्सा छठा मनाइकै, जल नहिरों दीमा।
फिराहून होए लला ने, रण मंडिआ धीमा।
भेड़ दुहूं दिस मच्चिआ, सट्ट पई अजीमा।
सिर धड़ डिग्गे खेत विच, जिउं वाहण ढीमां।
मार लला बहलीम ने, रण मै धर सीमा।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज श्री गुरु रामदास जी द्वारा रचित 'वडहंस की वार' को श्री गुरु अरजन देव जी ने इस धुन पर गाने का आदेश दिया है, जिसकी शुरूआत इस तरह है :

तू आपे ही आपि आपि है आपि कारणु कीआ ॥
(पन्ना ५८४)

६. जोधै वीरै पूरबाणी की वार : लोक-रिवायत के अनुसार पूरबाण नामक एक राजपूत राजा था, जिसके दो बहादुर पुत्र थे, जिनमें एक का नाम जोधा तथा दूसरे का नाम वीरा था। ये जंगल में छिपकर डाके डालते थे। बादशाह अकबर इनकी बहादुरी के कई किस्से सुन चुका था। एक दिन बादशाह ने इनको अपनी फौज में नौकरी करने का सुझाव दिया परंतु इन्होंने इस सुझाव को ठुकरा दिया क्योंकि वे बादशाह की नौकरी करने वाले राजपूतों से अलग किस्म के आदमी थे। यह बात अकबर को अच्छी न लगी और उसने गुस्से में आकर फौज को उन पर चढ़ाई करने का हुक्म दे दिया। दोनों भाई अद्वितीय वीरता का प्रदर्शन करते हुए वीरगति को प्राप्त कर गए। उनके इस साके को किसी ढाडी ने बहुत ही रुचि से वार-रचना द्वारा गायन किया जो कि लोगों में बहुत लोकप्रिय हो गई। इस वार की बानगी इस प्रकार है :

जोध वीर पूरबाणीए, दो गल्लां करी करारीआं।
फौज चढ़ाई बादशाह, अकबर रण भारीआं।
सनमुक्ख होए राजपूत, शुतरी रणकारीआं।
धूह मिआनों कढ्ढीआं, बिज्जुल चमकारीआं। . . .
एही कीती जोध वीर, पतशाही गल्लां सारीआं।

इस वार की धुनी पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज 'रामकली की वार महला ३' को गाने

का आदेश श्री गुरु अरजन देव जी ने किया है। इस वार में एक पंक्ति इस प्रकार है :

सचै तखतु रचाइआ बैसण कउ जांई ॥

(पन्ना ९४७)

७. वार राइ महमे हसने की : लोक-कथा के अनुसार महिमा तथा हसना भट्टी राजपूत थे जो मालवा क्षेत्र कांगड़ तथा धौले के रजवाड़े थे। हसने ने धोखे से महिमे की अकबर बादशाह के पास शिकायत कर उसे कैद करवा दिया। महिमे ने अपनी बहादुरी से बादशाह को खुश करके बागी हुए हसने को सोधने की आज्ञा ली और दोनों के मध्य भारी युद्ध हुआ। इस युद्ध में हसना हार गया।

इस घटना के बारे में एक अन्य वार्ता भी प्रचलित है कि हसना अकबर बादशाह के पास नौकर था। हसने को बादशाह ने किसी गलती करने के कारण नौकरी से निकाल दिया था। वह महिमे की शरण में चला गया तथा आखिर में उसको धोखा दे मामला न अदा करने के दोष में गिरफ्तार करवा दिया। बाद में बादशाह को वास्तविकता का पता चला तो उसने महिमे को फौज देकर हसने को सोधने के लिए भेजा। लड़ाई में हसना हार गया और उसको कैद कर लिया गया। माफी मांगने पर महिमे को छोड़ दिया गया। दोनों की बहादुरी को देखते हुए किसी ढाडी ने इनकी वार लिखकर लोगों को सुनाई जो लोगों में बहुत लोकप्रिय हुई जिसकी बानगी इस प्रकार है :

महिमा हसना राजपूत, राइ भारे भट्टी।
हसने बेईमानगी नाल महिमे थट्टी।
भेड़ दुहां दा मच्चिआ, सर वगे सफट्टी।
महिमे पाई फते रन, गल हसने घट्टी।
बंन्ह हसने नूं छड्डिआ, जस महिमे खट्टी।

श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु रामदास जी द्वारा उच्चारण की सारंग राग में लिखी वार को इस वार की धुनि पर गाने की हिदायत की है। इस वार की पावन पंक्ति इस प्रकार है :

आपे आपि निरंजना जिनि आपु उपाइआ ॥

(पन्ना १२३७)

८. वार राणे कैलास तथा मालदे की : लोक-कहानी के अनुसार कैलाश देव तथा मालदेव दोनों राजपूत भाई थे और दोनों जहांगीर बादशाह के समय कांगड़े के क्षेत्र में अपनी रियासत के मालिक थे। ये दोनों मुगल बादशाह को कर देते थे। बादशाह इनके प्रति मन ही मन शत्रुता रखता था। एक दिन बादशाह ने अपना वैर निकालने के लिए दोनों भाइयों में वैर-भावना भर दी। वैर का निपटारा करने के लिए दोनों में युद्ध हो गया। इस भयानक युद्ध में कैलाश देव हार गया। मालदेव ने भाई द्वारा माफी मांगने पर उसे आधा राज्य दे दिया। उस साके को लेकर किसी ढाडी द्वारा जो वार रची गई वह लोगों में बहुत प्रसिद्ध हुई। इस वार की बानगी इस प्रकार है :

धरत घोड़ा परबत पलाण, सिर टट्टर अंबर।
नउ सै नदी नड़िंनवें, राणा जल कंधर।
ढुक्का राइ अमीर दे, कर मेघ अडंबर।
आनत खंडा राणिआ कैलासे अंदर।
बिज्जुल जयों चमकाणीआं, तेगां विच अंबर।
मालदेव कैलास नूं, बंन्हिआ कर संघर।
फिर अद्धा धन माल दे, छड्डिआ गढ़ अंदर।
मालदेउ जस्स खट्टिआ, जिउं शाह सिकंदर।

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा मलार राग में रचित वार को श्री गुरु अरजन देव जी ने इस वार की धुनी पर गाने का आदेश किया है। इस वार की एक पंक्ति इस प्रकार है :

आपीन्है आपु साजि आपु पछाणिआ ॥

(पन्ना १२७९)

९. वार मूसे की : प्रचलित रिवायत के अनुसार

मूसा बहुत ही शूरवीर तथा स्वाभिमान वाला जागीरदार था। उसकी मंगेतर का किसी अन्य रजवाड़े के साथ विवाह हो गया। मूसा इसको बर्दाश्त न कर सका। उसने उस जागीरदार पर हमला कर दिया तथा अपनी मंगेतर सहित उसको पकड़कर ले आया। मंगेतर को उसने संबोधन किया कि तेरे मन की इच्छा क्या है? तू किसके साथ रहना चाहती है? उसने उत्तर दिया कि जिसके साथ मेरा विवाह हो चुका है, मैं उसी की पत्नी के रूप में रहूंगी। उस स्त्री की इच्छा जानकर मूसा बहुत खुश हुआ तथा दोनों को बहुत मान-सम्मान से विदा किया। मूसे की बहादुरी एवं उदारता पर किसी ढाडी ने दिल को छू लेने वाली वार लिखी जो बहुत लोकप्रिय है। इस वार की बानगी इस प्रकार है :

त्रै सै सठ मरातबा, इकि घुरिऐ डग्गे।
चढ़िआ मूसा पातसाह, सभ सुणिआ जग्गे।
दंद चिट्टे बड हाथीआं, कहु कित वरग्गे ?
रुत्त पछाती बगुलिआं, घट काली बग्गे।
एही कीती मूसिआ, किन करी न अग्गे।

इस वार की धुनी पर श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु रामदास जी द्वारा रचित 'कानड़े की वार' को गाने का संकेत श्री गुरु ग्रंथ साहिब में किया है। इस वार की एक पंक्ति इस प्रकार है :

तूं आपे ही सिध साधिको तू आपे ही जुग जोगीआ ॥ (पन्ना १३१३) ꙮ

कविता

नारी

अर्द्धांगिनी नहीं,
पूर्णांगिनी है नारी।
पति-चरणों की
दासी नहीं,
उसके जीवन का
साथी है नारी।
दोयम नहीं,
बराबर की
हकदार है नारी।
पुरुषों के समकक्ष,
दुनिया की हर गुत्थी
सुलझाने में
सक्षम है नारी।
हाड़-मांस का मात्र
लोथड़ा नहीं,
देश की प्रगति में
हाथ बंटाने वाली
सम्पूर्ण व्यक्ति है नारी।
'पति देवता', 'पति परमेश्वर'
पुरुषवादी समाज द्वारा
स्वयंभू श्रेष्ठता के
घड़े गये विशेषण हैं केवल
हर पल, हर कार्य में
पति का साथ निभाती
उसकी सर्वश्रेष्ठ दोस्त है नारी।
दान की वस्तु नहीं,
संपूर्ण व्यक्तित्व की स्वामिनी
प्रकृति का बेशकीमती
उपहार है नारी।
पीढ़ियों को श्रेष्ठत्व देती
संस्कार पोषिका
पृथ्वी पर नव कोंपले खिलाती
सृजना है नारी।



-डॉ. प्रदीप शर्मा 'स्नेही', प्राचार्य, एस. ए जैन कॉलेज, अंबाला शहर, हरियाणा।

पारब्रहम की जिसु मनि भूख

–स. रमेश सिंघ*

श्री गुरु अरजन देव जी 'सुखमनी साहिब' बाणी में सारी दुनिया को सुखी रहने का फार्मूला बताते हुए फरमान करते हैं कि जिस मन के अंदर प्रभु की भूख होगी वह कभी दुखी नहीं रहेगा :

पारब्रहम की जिसु मनि भूख ॥
नानक तिसहि न लागहि दूख ॥ (पन्ना २८१)

प्रश्न उठता है कि प्रभु कौन है तथा प्रभु की भूख लगने का क्या अर्थ है? गुरबाणी के अनुसार, प्रभु समस्त गुणों का मालिक है, अत: प्रभु की भूख का अर्थ हुआ-- "प्रभु-गुणों की चाहत पैदा होना।" प्रभु गुण सुख प्रदान करते हैं तथा अवगुण मन में दुख पैदा करते हैं। इन सारे अवगुणों की जननी है-- 'हउमैं, मैं।'

जिस मन में जितनी अधिक शिकायत होगी वह उतना ही दुखी होगा। यह शिकायत किसी व्यक्ति से हो सकती है, किसी वस्तु से हो सकती है, किसी स्थान से हो सकती है, किसी हालात से हो सकती है। शिकायत एक बड़ा अवगुण है और शिकायत का मूल है-- अहं। प्रभु को किसी से कोई शिकायत नहीं, इसी कारण प्रभु सुखों का सागर है। जो शिकायतों से भरा हुआ है उसके अंदर दुख भरे हुए हैं। श्री गुरु अरजन देव जी गर्म तवी पर बैठकर कह रहे हैं :

--उलाहनो मै काहू न दीओ ॥
मन मीठ तुहारो कीओ ॥ (पन्ना ९७८)
--तेरा कीआ मीठा लागै ॥
हरि नाम पदारथु नानक मांगै ॥ (पन्ना ३९४)

धैर्य, आज्ञा-पालन, सहन-शक्ति, रज़ा में राज़ी रहना ये सारे प्रभु के गुण हैं और प्रभु की भूख इनके गुणों की भूख है। यह भूख जितनी बढ़ेगी, जितना धैर्य बढ़ेगा, जितनी सहन-शक्ति बढ़ेगी, रज़ा में राज़ी रहने की ताकत जितनी बढ़ेगी, जितना जीव प्रभु की आज्ञा मानेगा, उतना ही उसका जीवन सुखमय होगा। जिस जीव में विनम्र बनने की जितनी भूख होगी, दूसरों को माफ करने की भावना होगी, जिसके अंदर सबके लिए भले की भावना होगी, जो सबको प्यार करना चाहेगा; जो कदापि यह नहीं कहेगा कि मैं और बर्दाश्त नहीं कर सकता; जो सदा अपनी सहन-शक्ति को बढ़ाने का चाहवान होगा; जो हर हाल में प्रभु की रज़ा को सहर्ष मानने का शौक पालेगा; जो गुरु के प्रत्येक आदेश को ध्यान से सुनकर उस आज्ञा का पालन करने की चाहत पालता रहेगा; जो हर वक्त मन को पांच चोरों से बचाकर रखने और गुरु के हुक्म के अनुसार जीवन ढालने के लिए प्रयत्नशील रहेगा; जिसे निंदा सुनने और करने से नफ़रत तथा प्रभु के गुणगान करने का शौक बढ़ता जाएगा, वो सदा सुखी रहेगा। *"गुर प्रसादि आपन आपु सुझै ॥ तिस की जानहु त्रिसना बुझै ॥"* गुरु-कृपा से जो स्वयं को पहचान लेता है कि वह प्रभु की अंश है, उसके अंदर प्रभु-गुण प्रकट होने लगते हैं, उसकी तृष्णा बुझ जाती है; वह गुरु के उपदेशों के दायरे के अंदर रहकर जीवन जीता है और मन से हर वक्त प्रभु की महिमा का गुणगान करता रहता है। गुणों (सुखों) के साथ जुड़ने के कारण वह अवगुणों (दुखों) से बचा रहता है। वह गृहस्थी होने के बावजूद भी माया में लिप्त नहीं होता; मन से हर वक्त प्रभु की कीर्ति करते-करते वह सहज अवस्था को पा लेता है। वह केवल 'एक' के ऊपर ही आस रखता है। 'एक' की आस गुणों की आस है। 

C-131,Sonari West, Jamshedpur-831011 (Jharkhand); Mob. 96318-21636

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी : स्थापना की पृष्ठभूमि एवं उपलब्धियां

*-डॉ. राजेंद्र सिंह साहिल**

सन् १९२० से १९२५ तक का समय सिक्ख समाज के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ। इस दौर में समस्त गुरुद्वारा साहिबान को महंतों-पुजारियों के कुप्रबंधों से मुक्त कराने के लिए सिक्खों ने एक व्यापक जन-आंदोलन छेड़ा जो सिक्ख इतिहास में 'गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर' के नाम से प्रसिद्ध है।

पृष्ठभूमि : दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी एवं बाबा बंदा सिंघ बहादर के पश्चात् सन् १७२० से लेकर १७८० तक का समय सिक्खों के लिए ज़बरदस्त संघर्ष का समय था। सिक्ख जंगलों में रहकर छापामार युद्ध जारी रखे हुए थे। ऐसे में गुरुधामों का प्रबंध उदासी संप्रदाय के महंतों के हाथ में दे दिया गया। महंतों ने सिक्खों की अनुस्थिति में लंबे समय तक गुरुधामों की सेवा-संभाल की। महाराजा रणजीत सिंघ के काल में गुरुद्वारों-गुरुधामों की इमारतों एवं संपत्तियों का बड़े पैमाने पर निर्माण हुआ परंतु इनका प्रबंध महंतों के ही पास रहा। १८४९ ई में अंग्रेजों ने पंजाब पर अधिकार कर लिया। इसके बाद भी यही स्थिति बनी रही। अंग्रेजों ने गुरुद्वारों पर कब्ज़ा जमाने के उद्देश्य से महंतों को अपनी ओर मिला लिया। महंतों ने भी गुरुद्वारों की संपत्ति के लालच में अंग्रेजों के हाथ की कठपुतली बनना स्वीकार कर लिया। ऐसे माहौल में गुरुद्वारा साहिबान में से 'गुरु-मर्यादा' भंग हो गई और ये महंतों आदि के भोग-विलास के अड्डे बन गये।

सिक्ख समाज इस कुप्रबंध और विलासिता से अत्यंत ही दुखी और व्यथित था, इसलिए गुरुद्वारा साहिबान को मुक्त कराने और गुरु-मर्यादा की पुन: स्थापना हेतु एक बड़ा जन-आंदोलन चलाने का निश्चय किया गया।

सिक्ख समाज में जागरूकता का उत्तरोत्तर विकास : सन् १८४९ ई में पंजाब को ब्रिटिश राज के अधीन करने के बाद अंग्रेजों ने पंजाब में ईसाई मिशनरियों का जाल बिछाना शुरू कर दिया। महाराजा रणजीत सिंघ के पुत्र महाराजा दिलीप सिंघ को ज़बरदस्ती ईसाई बना लिया गया और बड़ी संख्या में सिक्ख ईसाई बनाए जाने लगे। सिक्खों में आधुनिक शिक्षा एवं सांस्कृतिक चेतना का अभाव स्पष्ट दिखने लगा था। ऐसे में पहले बाबा राम सिंघ कूका के नेतृत्व में नामधारी आंदोलन चला। फिर स. ठाकुर सिंघ संधावालिया और प्रोफेसर गुरमुख सिंघ के नेतृत्व में 'सिंघ सभा लहर' का उदय हुआ।

'सिंघ सभा लहर' ने सिक्ख धर्म की पवित्रता फिर स्थापित करने, सिक्ख धर्म त्याग कर पतित हुए सिक्खों को पुन: पंथ में लाने, पुस्तकें आदि लिखवाकर सिक्ख धर्म एवं सिक्ख इतिहास का प्रचार-प्रसार करने, स्कूल-कॉलेज स्थापित करके सिक्खों को आधुनिक शिक्षा के साथ जोड़ने आदि जैसे महत्त्वपूर्ण कार्यों में विशेष भूमिका निभाई।

सिक्खों की धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक जागरूकता समय के साथ-साथ

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, मो: ९४१७२-७६२७१*

१९०७ ई के किसान आंदोलन, १९१४-१५ ई के गदर आंदोलन और राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलनों के साथ बढ़ती चली गई।

१९२० ई तक आते-आते सिक्खों को स्पष्ट हो गया था कि गुरुद्वारा साहिबान को उनका दुरुपयोग कर रहे महंतों एवं अंग्रेजों के चंगुल से आज़ाद कराना अनिवार्य हो गया है। जलियां वाला बाग़ के अपराधी जनरल डायर को श्री हरिमंदर साहिब के महंतों द्वारा सम्मानित किये जाने वाले घटनाक्रम ने सिक्ख-समाज को और भी आंदोलित कर दिया।

गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर का आरंभ : गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर का आरंभ सियालकोट के गुरुद्वारा साहिब 'बाबे दी बेर' की घटना से हुआ। यहां के महंत की मृत्यु के बाद उसकी विधवा ने अपने नाबालिग बेटे को गद्दी पर बैठाकर एक पतित गंडा सिंह को उसका संरक्षक नियुक्त कर दिया। सिक्खों के भारी विरोध-प्रदर्शन के बाद भी जब उनकी बात नहीं सुनी गई तब सियालकोट के सिक्खों ने 'खालसा सेवक जत्था' गठित किया और गुरुद्वारा साहिब में सेवा आरंभ कर दी। गंडा सिंह के कई हथकंडों के बावजूद ५ अक्तूबर, १९२० ई को गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध सिक्खों ने संभाल लिया और एक तीन सदस्यीय कमेटी बनाई गई। ६ अक्तूबर को लाहौर के डिप्टी कमिश्नर ने इस प्रबंधक कमेटी को मान्यता दे दी। इस प्रकार यह प्रथम गुरुधाम था जो सिक्ख समाज के प्रबंधन में आया।

उधर श्री हरिमंदर साहिब एवं श्री अकाल तख़्त साहिब पर भी महंतों का कब्ज़ा था। यहां उन्होंने मनमर्ज़ी की प्रथाएं चला रखी थीं और गुरुधाम में प्रवेश को लेकर जनता से ऊंच-नीच एवं जातिगत भेदभाव किया जाता था। १२ अक्तूबर, १९२० ई को कथित निम्न जातियों से सम्बंधित कुछ प्राणियों को जलियां वाला बाग़ में अमृत छकाया गया। जब ये गुरु-महाराज के दर्शन करने हेतु श्री हरिमंदर साहिब की दर्शनी ड्योढ़ी पर आये तो इन्हें अंदर जाने से रोक दिया गया। विरोध के पश्चात् महंत स्वयं सब कुछ छोड़कर नाराज़ होकर चले गये।

उसी समय उपस्थित संगत में से भाई तेजा सिंह को श्री अकाल तख़्त साहिब का जत्थेदार चुना गया। इनके अतिरिक्त १७ सहयोगी भी चुने गये। जत्थेदार ज्ञानी तेजा सिंह ने १५ नवंबर, १९२० ई को 'सरबत्त खालसा' का आह्वान किया ताकि पंथक मामलों पर विचार-विमर्श किया जा सके।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की स्थापना : श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी तेजा सिंघ द्वारा गुरुद्वारा साहिबान के प्रबंध से संबंधित योजना बनाने के लिए बुलाये गये 'सरबत्त खालसा' में १५ नवंबर, सन् १९२० ई को दस हज़ार से भी अधिक सिक्ख उपस्थित हुए। संगत में से ज़िलेवार प्रतिनिधि चुने गये और १७५ सदस्यों की एक संस्था बनाई गई। इस संस्था को 'शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी' नाम दिया गया। कमेटी को अधिकार दिये गये कि वह सारे पंजाब एवं भारत के अन्य गुरुद्वारा साहिबान को अपने प्रबंध अधीन लाये और वहां गुरु-मर्यादा के अनुसार व्यवस्था कायम करे। १५ नवंबर के 'सरबत्त खालसा' में गुरुद्वारा साहिबान को मुक्त करवाते समय महंतों या सरकार से संघर्ष की स्थिति में अहिंसा की नीति अपनाने का फैसला किया गया।

इस उद्देश्य-प्राप्ति में सहायता देने के लिए २० दिसंबर, १९२० ई को 'शिरोमणि अकाली दल' की स्थापना की गई। सरदार सरदूल सिंघ

कवीशर इसके पहले प्रधान बने। इस दल का प्रमुख कार्य शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा निर्धारित किये गये मोर्चों के लिए जत्थे भेजना था।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा लगाये गये प्रमुख मोर्चे : नवंबर, १९२० ई में ही गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब के महंत की मृत्यु हो गई। भाई करतार सिंघ और अन्य २५ सिक्खों का जत्था १८ नवंबर को गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब पहुंचा। महंत के विरोध के बावजूद जत्थे ने अगले ही दिन गुरुद्वारा साहिब को मुक्त करवाकर वहां गुरु-मर्यादा स्थापित कर दी।

श्री दरबार साहिब, तरनतारन के महंत को समझाया गया कि वह वहां गुरु-मर्यादा स्थापित करे। महंत ने एक न सुनी। भाई तेजा सिंघ के नेतृत्व में ४० सिक्खों का जत्था श्री दरबार साहिब, तरनतारन भेजा गया। ७० महंतों ने साजिश रचते हुए रात को निहत्थे सिक्खों पर हमला कर दिया। दो सिक्ख शहीद हो गये परंतु २६ जनवरी, १९२१ ई को श्री दरबार साहिब, तरनतारन में गुरु-मर्यादा स्थापित कर दी गई।

श्री ननकाणा साहिब में भाई लछमण सिंघ और भाई दलीप सिंघ के जत्थे को भयानक यातनाएं सहनी पड़ीं। महंत और उसके गुंडों ने सिक्खों पर बंदूकों-लाठियों से हमला कर दिया। अनेक सिक्ख शहीद हो गये। अनेकों घायल सिक्खों को ज़िंदा जला दिया गया। अंततः भाई करतार सिंघ के जत्थे ने गुरुधाम को मुक्त करा लिया। यह भयानक घटना 'साका ननकाणा साहिब' कहलाती है जो २१ फरवरी, १९२१ ई को घटित हुई थी।

८ अगस्त, १९२२ ई को अजनाला तहसील के गांव घुक्केवाली में गुरुद्वारा गुरु का बाग में लंगर हेतु लकड़ी लेने गये पांच सिक्खों को अंग्रेजों ने कैद कर लिया। सिक्खों ने मोर्चा खोल दिया। साढ़े तीन महीने में नौ सिक्ख शहीद हुए और ५६०५ को गिरफ्तार किया गया। १७ नवंबर, १९२२ ई को गुरुधाम गुरु का बाग सिक्खों को सौंप दिया गया और मोर्चा फ़तहि हो गया।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी एवं शिरोमणि अकाली दल द्वारा लगाये अन्य मोर्चों में 'चाबियों का मोर्चा' और 'जैतो का मोर्चा' भी प्रमुख है।

कई स्थानीय गुरुद्वारा साहिबान को तो वहां के स्थानीय लोगों ने ही मिलकर मुक्त करा लिया और वहां गुरु-मर्यादा स्थापित कर दी। शीघ्र ही अधिसंख्य गुरुधाम पंथ के प्रबंध में आ गये।

गुरुद्वारा एक्ट-१९२५ का लागू होना : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी एवं शिरोमणि अकाली दल के नेतृत्व में चले गुरुद्वारा प्रबंध सुधार आंदोलन के फलस्वरूप अंग्रेज सरकार ने २८ जुलाई, १९२५ ई को गुरुद्वारा एक्ट बना दिया जो १ नवंबर, १९२५ ई से लागू हो गया।





गुरबाणी चिंतनधारा : ८५

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

जिहबा एक उसतति अनेक ॥
सति पुरख पूरन बिबेक ॥
काहू बोल न पहुचत प्रानी ॥
अगम अगोचर प्रभ निरबानी ॥
निराहार निरवैर सुखदाई ॥
ता की कीमति किनै न पाई ॥
अनिक भगत बंदन नित करहि ॥
चरन कमल हिरदै सिमरहि ॥
सद बलिहारी सतिगुर अपने ॥
नानक जिसु प्रसादि ऐसा प्रभु जपने ॥५॥
(पन्ना २८७)

१८वीं असटपदी की पांचवी पउड़ी में श्री गुरु अरजन देव जी परमेश्वर के अनंत गुणों की चर्चा करते हैं। साथ ही यह भी स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि जीव एक जिह्वा (जीभ) वाला प्राणी है और उस मालिक के गुण अनंत हैं। अकाल पुरख ने जिस पर कृपा की उसे पूर्ण गुरु मिला दिया। जिस पर गुरु की कृपा-दृष्टि हो गई उसने परमेश्वर का सिमरन कर उसके निर्मल गुणों को हृदय में बसा लिया।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि मनुष्य की जिह्वा तो एक ही है लेकिन परमेश्वर के गुण अनंत हैं। उसकी उपमा बयान (कथन) से परे है। एक जिह्वा से अनंत गुणों के मालिक प्रभु के पूर्ण गुणों को नहीं कहा जा सकता। परमेश्वर सत्य स्वरूप है, पूर्ण सामर्थ्य वाला है तथा ज्ञान-स्वरूप है। वह नीर-क्षीर विवेकी है। व्यक्ति किसी बोल द्वारा परमेश्वर तक नहीं पहुंच सकता। परमेश्वर मन एवं बाणी की पहुंच से परे है। वह इंद्रियों की पहुंच से परे है अर्थात् ज्ञानेंद्रियों द्वारा निर्गुण-निराकार परमेश्वर को नहीं पाया जा सकता। प्रभु आहार रहित है। उसे किसी तरह के खाने-पीने की वस्तु की मोहताजी नहीं, क्योंकि वह इन आवश्यकताओं से पूर्णतया मुक्त है। वह निरवैर है; वैर-विरोध से पूर्णतया रहित है तथा सुखों का दाता है। उसके गुणों की कीमत कोई नहीं आंक सकता। उसके मूल्य को न कोई आंक पाया है और न ही भविष्य में आंक पायेगा। अनेक भक्त-जन हर रोज उसकी आराधना करते हैं। उसके चरण-कमलों का हृदय में ध्यान धरते हैं अर्थात् नम्रतापूर्वक उसका सिमरन करते हैं। गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि मैं सदैव अपने गुरु से बलिहार जाता हूं जिसकी मेहरबानी से परमेश्वर को जपा जा सकता है।

परमेश्वर अमर-अविनाशी है, ज्ञान का अथाह भंडार है, निरवैर स्वरूप है, सुखों की खान है, मनुष्य की कल्पना एवं समझ से परे है। वह इंद्रियों का विषय नहीं है। गुरु पातशाह ने प्रभु के चरणों को हृदय में बसाने का निर्मल उपदेश दिया है, जिससे भाव है कि शबद में लिव जोड़कर प्रभु-सिमरन करना और आठ पहर उसको हृदय-घर में बसाकर रखना। पावन गुरबाणी में अन्यत्र भी समझाया गया है :

बंधन तोड़ि चरन कमल द्रिड़ाए एक सबदि लिव लाई ॥
अंध कूप बिखिआ ते काढिओ साच सबदि बणि आई ॥
(पन्ना ९१५)

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३*

यही नहीं, वह दातार पिता समस्त प्राणियों की प्रतिपालना करने वाला है। गुरबाणी में ऐसे दाता स्वरूप परमेश्वर का अनेकों बार वर्णन मिलता है :

तू दाता सभना जीआ का आपन कीआ पालना ॥
(पन्ना ९१५)

उस परवरदिगार से हम दातें प्राप्त करके उसे हृदय-घर से भुला न दें। हर पल उसका शुक्राना करें। हर पल गुरबाणी आशयानुसार उसके चरण-कमलों में अरदास करें :

विसरु नाही दातार आपणा नामु देहु ॥
गुण गावा दिनु राति नानक चाउ एहु ॥
(पन्ना ७६२)

इहु हरि रसु पावै जनु कोइ ॥
अंम्रितु पीवै अमरु सो होइ ॥
उसु पुरख का नाही कदे बिनास ॥
जा कै मनि प्रगटे गुनतास ॥
आठ पहर हरि का नामु लेइ ॥
सचु उपदेसु सेवक कउ देइ ॥
मोह माइआ कै संगि न लेपु ॥
मन महि राखै हरि हरि एकु ॥
अंधकार दीपक परगासे ॥
नानक भरम मोह दुख तह ते नासे ॥६॥

उपरोक्त पउड़ी में गुरु पातशाह जी ने परमेश्वर के नाम की महिमा को बयान किया है कि किसी विरले भाग्यशाली को यह नाम-रस प्राप्त होता है और वह अमर हो जाता है। जिस हृदय-घर में ज्ञान का दीपक जलता है उस हृदय से अज्ञानता का अंधेरा दूर हो जाता है और वह विकारों से बचकर सदा कायम रहने वाले सुख को प्राप्त कर लेता है।

श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि इस संसार में कोई विरला व्यक्ति हरि-नाम का स्वाद चखता है। जो यह रस चखता है वही नाम रूपी अमृत का पान करता है और अमर हो जाता है अर्थात् नाम अमृत पीने वाले जीव का कभी विनाश नहीं होता है। जिस हृदय-घर में गुणों के खज़ाने प्रभु का प्रकाश हो जाता है उसका कदाचित विनाश नहीं होता अर्थात् वह आवागमन के चक्करों में नहीं फंसता, उससे सर्वदा मुक्त हो जाता है।

पूर्ण गुरु सदैव (आठों प्रहर) परमेश्वर का ही नाम-सिमरन करता है और अपने सेवक को भी यही सच्चा (सदा कायम रहने वाला) नाम सिमरने का उपदेश देता है। ऐसे श्वास-श्वास नाम जपने वालों का मोह-माया में फंसे हुए (गलतान हुए) लोगों से कभी मेल नहीं होता। ऐसा व्यक्ति मोह-माया से निर्लिप्त रहते हुए केवल परमेश्वर को अपने हृदय-घर में बसाता है। गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि जिसके अंत:करण से नाम रूपी दीपक से अज्ञानता का अंधेरा दूर होकर प्रकाश हो जाता है उसके भ्रम-भुलेखों एवं मोह के कारण पैदा हुए दुख दूर हो जाते हैं।

उपरोक्त पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह ने जहां एक ओर यह समझाया है कि गुरु-कृपा से नाम रूपी हरि-रस की प्राप्ति होती है जिसकी बदौलत जीव मुक्तावस्था को प्राप्त कर लेता है, साथ ही इस तथ्य को भी उजागर किया है कि जिस प्रकार दीया जलाने से प्राकृतिक रूप से अंधकार दूर हो जाता है उसी प्रकार परमेश्वर के नाम रूपी दीये से समस्त संशय, भ्रम तथा मोह रूपी विकार के कारण उत्पन्न हुए दुख, क्लेश और बंधन दूर हो जाते हैं। इन दोनों रहस्यों को गुरबाणी के अन्य उदाहरणों द्वारा समझने का यत्न करते हैं। श्री गुरु अमरदास जी की पावन बाणी में भी यही संदेश है कि गुरु-कृपा से हरि-रस की प्राप्ति होती है और आवागमन से छुटकारा मिलता है :

हरि का नामु मीठा अति रसु होइ ॥
पीवत रहै पीआए सोइ ॥

गुर किरपा ते हरि रसु पाए ॥
नानक नामि रते गति पाए ॥ (पन्ना ३६१)

यही नहीं, श्री गुरु नानक देव जी ने दीपक के दृष्टांत से समझाया है कि ज्ञान का पाठ पढ़ने-सुनने से पापों वाली मति नष्ट हो जाती है और ज्ञान का सूर्य चमक उठता है :

दीवा बलै अंधेरा जाइ ॥
बेद पाठ मति पापा खाइ ॥
उगवै सूरु न जापै चंदु ॥
जह गिआन प्रगासु अगिआनु मिटंतु ॥(पन्ना ७९१)

छठी पउड़ी की अंतिम पंक्ति में श्री गुरु अरजन देव जी ने इस तथ्य को भी समझाया है कि मोह दुख का कारण है और ज्ञान के प्रकाश से मोह-जनित दुख दूर हो जाते हैं। इसे हम गुरु-कृपा से समझने का यत्न करें। असल में मनीषियों के चिंतनानुसार मोह मीठा ज़हर है। मोहवश इंसान पाप-कर्म की ओर प्रवृत्त होता है और उसे समझ ही नहीं आती कि जिनके लिए मोह-वश होकर वह पाप-कर्म करता है वे अक्सर जीते-जी उसकी बात नहीं पूछते। मनुष्य के पास फिर पछतावे के अतिरिक्त कुछ नहीं बचता। मोह का दायरा अति सीमित है। उसी में गलतान हुआ मनुष्य प्रेम के व्यापक और श्रेष्ठ मार्ग से वंचित रह जाता है। गुरबाणी हमें मोह-विकार से बचकर प्रेम रूपी सद्गुणों को अपनाने की प्रेरणा देती है जिसमें लोक-कल्याण की भावना निहित है। मोह स्वार्थ का प्रतीक है, प्रेम परार्थ का प्रतीक है। गुरबाणी में मोह की तुलना कीचड़, जाल, फांसी का फंदा आदि से की गई है :

हे अजित सूर संग्रामं अति बलना बहु मरदनह ॥
गण गंधरब देव मानुख्यं पसु पंखी बिमोहनह ॥
(पन्ना १३५८)

अर्थात् हे संग्राम के अजेय शूरवीर (मोह)! तुम अत्यंत बलशाली और अनेकों का नाश कर देने वाले हो। तुमने गणों, गंधर्वों, देवताओं, मनुष्यों और पशु-पक्षियों को भी मोहित कर रखा है।

मोह रूपी अंधे कुएं में गिरे हुए को किसी विशेष सहारे की ज़रूरत होती है। इससे निकलने हेतु गुरु-चरणों में अरदास की गई है :

हम ते कछू न होवना सरणि प्रभ साध ॥
मोह मगन कूप अंध ते नानक गुर काढ ॥
(पन्ना ८१६)

गुरबाणी हमें मोह के दलदल से निकल कर प्रेम के मार्ग को अपनाने की प्रेरणा देती है, जैसा कि दशम पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का पावन संदेश है :

साचु कहों सुन लेहु सभै जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ ॥ (त्वप्रसादि सवैये)

सहजता एवं श्रद्धा-भावना से पावन बाणी को पढ़ने-सुनने और गुरु-चरणों में अरदास करने से जीव विकारों से बच जाता है। काम संयम में, क्रोध शूरवीरता में, लोभ संतोष में, मोह प्रेम में तथा अहंकार विनम्रता में रूपांतरित हो जाता है। जीव अपने जीवन-मनोरथ में कामयाबी हासिल कर लेता है। शेख फरीद जी का पावन शबद यहां उल्लेखनीय है कि किस प्रकार से विकार आध्यात्मिक मार्ग में रुकावट बनते हैं और कैसे परमेश्वर के प्यारे अपने जीवन-मकसद में कामयाब हो जाते हैं :

भिजउ सिजउ कंबली अलह वरसउ मेहु ॥
जाइ मिला तिना सजणा तुटउ नाही नेहु ॥
(पन्ना १३७९)

ऐसा प्यार एवं विश्वास हमें भी नसीब हो जाये तो हमारा यह दुर्लभ मानव-जीवन धन्य जो जाये।

तपति माहि ठाढि वरताई ॥
अनदु भइआ दुख नाठे भाई ॥
जनम मरन के मिटे अंदेसे ॥
साधू के पूरन उपदेसे ॥

भउ चूका निरभउ होइ बसे ॥
सगल बिआधि मन ते खै नसे ॥
जिस का सा तिनि किरपा धारी ॥
साधसंगि जपि नामु मुरारी ॥
थिति पाई चूके भ्रम गवन ॥
सुनि नानक हरि हरि जसु स्रवन ॥७॥

१८वीं असटपदी की ७वीं पउड़ी में गुरु पातशाह जी ने गुरु-उपदेश की महिमा गायन की है कि गुरु-उपदेश द्वारा जीवन में तबदीली आती है तथा विकारों से तपा हुआ हृदय शीतल हो जाता है। जीव भय-मुक्त होकर जीवन में भ्रम-भुलेखों से छुटकारा पाकर आनंदपूर्वक विचरण करने लगता है।

गुरु पातशाह जी पावन फरमान करते हैं कि हे भाई! गुरु ने हमारे तपते हुए हृदय को शीतलता प्रदान कर दी है। विकारों की तपिश केवल प्रभु के निर्मल नाम से ही मिट सकती है। गुरु के पावन उपदेश की बरकत से जीव ने नाम जपना प्रारंभ किया, जिसकी बदौलत विकारों की तपिश में ठंडक नसीब हो गई है। हृदय-घर में आनंद का प्रवेश हो गया है अर्थात् आनंद ही आनंद हो गया है। समस्त दुख-क्लेश मिट गए हैं, मानो कहीं दूर भाग गए हों। उनके अब पास आने की संभावना ही नहीं रही। जन्म-मरण के भय से मुक्ति मिल गई है। जीव सतिगुरु के पूर्ण उपदेश से भय-मुक्त होकर, निर्भय होकर विचरण करने लगा है अर्थात् निर्भय स्वरूप होकर सुखी हो गया है। समस्त व्याधियां (शारीरिक रोग) नाश हो गए हैं। मन से सभी प्रकार के रोग दूर हो गए हैं। जिस गुरु के चरणों में जीव ने स्वयं को समर्पित कर दिया उसी की रहमत से सतसंगत नसीब हुई, जिसमें आकर प्रभु का नाम-सिमरन होने लगा है। प्रभु का नाम जपने से मन में ठहराव आया अर्थात् मन समस्त भटकावों से बचकर निश्चल अवस्था को प्राप्त हो गया। गुरु पंचम पातशाह अंतिम पंक्ति में पावन फरमान करते हैं कि प्रभु-यश कानों से सुनकर ही उपरोक्त फल की प्राप्ति हुई है। सतसंगत में आकर प्रभु-नाम सुनने से ही सभी भ्रम दूर हुए और आवागवन से मुक्ति नसीब हुई है।

असल में जिस मालिक ने जीव को इस संसार की यात्रा पर भेजा है और उसके जीवन का कोई विशेष मनोरथ बनाया है उसकी यात्रा तभी सुखद हो सकती है और उसे कामयाबी की मंज़िल भी तभी प्राप्त हो सकती है जब प्रभु जीव पर कृपा करके उसे साधसंगत में मिलाकर अपनी बंदगी करने का सौभाग्य बख़्शे अन्यथा जीव विकारों की अग्नि से, भ्रम-भुलेखों की लहरों से तथा आवागमन के चक्करों से मुक्त नहीं हो सकता। वैसे भी नाम-श्रवण की महिमा अपार है। जपु जी साहिब में श्री गुरु नानक देव जी ने नाम-श्रवण की महिमा को बयान करते हुए कलयुगी जीवों को समझाया है कि प्रभु का नाम सुनने से जीव ऊंची अवस्था का मालिक बन जाता है, उसके समस्त दुखों-क्लेशों का नाश हो जाता है और हृदय-घर में सदा आनंद की अनुभूति होती है :

सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु ॥
सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ॥ . . .
नानक भगता सदा विगासु ॥
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥ (पन्ना २)

वाहिगुरु रहमत करें! हमें भी गुरबाणी में सुरति जोड़कर पढ़ना एवं सुनना आ जाये और हमारा यह जीवन सफल हो जाये।

निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही ॥
कला धारि जिनि सगली मोही ॥
अपने चरित प्रभि आपि बनाए ॥
अपुनी कीमति आपे पाए ॥
हरि बिनु दूजा नाही कोइ ॥
सरब निरंतरि एको सोइ ॥

ओति पोति रविआ रूप रंग ॥
भए प्रगास साध कै संग ॥
रचि रचना अपनी कल धारी ॥
अनिक बार नानक बलिहारी ॥८॥१८॥

१८वीं असटपदी की अंतिम पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह जी ने परमेश्वर के निर्गुण-निराकार एवं सगुण-साकार रूप की सुंदर विवेचना की है कि किस प्रकार परमेश्वर माया के तीनों गुणों से निर्लिप्त है। साथ ही त्रिगुणी माया में गलतान इस संसार का रूप भी वह आप ही है, इस संसार की अजब रचना करके निराकार होते हुए भी वह सर्वत्र में समाकर सबको विमोहित कर रहा है। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि परमेश्वर निर्गुण-निराकार भी है और सगुण-साकार भी है। उसने अपने अद्भुत कारनामों द्वारा संपूर्ण सृष्टि को मोह रखा है अर्थात् अपने वश में कर रखा है। प्रभु ने अपने कौतुक आप ही रचे हैं, अपनी तथा अपने द्वारा सृजित सृष्टि की कीमत वह स्वयं ही आंक सकता है अर्थात् प्रभु ने सारे जगत की खेल-रचना स्वयं ही रची है। अपनी कीमत वह स्वयं ही आंकने में समर्थ है। अन्य कोई उसकी कीमत नहीं जान सकता। प्रभु के बिना कोई अन्य उस जैसा नहीं है। सबके अंदर वह आप ही निरंतर व्याप्त है। वह ताने-बाने की तरह संपूर्ण रचना में कई रंगों-रूपों में समाया हुआ है। इस तथ्य का ज्ञान संत की संगत में होता है अर्थात् सतिगुरु की संगत से हृदय-घर में ज्ञान का प्रकाश होता है कि उसके बिना न कोई कण है, न ही कोई जन। सर्वत्र उस निर्गुण का सगुण प्रसार है। अंतिम पंक्ति में श्री गुरु अरजन देव जी परमेश्वर पर कुर्बान जाते हुए पावन वचन करते हैं कि मैं बार-बार बलिहार जाता हूं उस प्रभु पर से जिसने यह जगत-रचना बनाकर उसमें अपनी सत्ता टिकाई हुई है अर्थात् जिसने यह रचना रचकर अपनी कला से उसे आधार बख़्शा है।

जर्रे-जर्रे में व्यापक परमेश्वर अनंत है, उसकी रचना-कौतुक अनंत है। इस गूढ़ रहस्य की समझ गुरु की संगत में आकर ही होती है। गुरबाणी में अनेक उदाहरणों द्वारा परमेश्वर के निर्गुण एवं सगुण स्वरूप को बयान किया गया है :

सरगुण निरगुण थापै नाउ ॥
दुह मिलि एकै कीनो ठाउ ॥ (पन्ना ३८७)

अर्थात् सगुण एवं निर्गुण दोनों उसी के ही नाम हैं और ये दोनों अंततः एक ही हैं। गुरबाणी में अन्यत्र भी यही गूढ़ रहस्य समझाया गया है कि वही वास्तव में ज्ञानी (पंडित) है जो इस तथ्य को समझ जाता है कि निर्गुण एवं सगुण प्रभु आप ही है। जिसने यह भेद पा लिया वह अपनी संपूर्ण कुल का उद्धार नाम के आसरे कर लेता है :

निरगुणु सरगुणु आपे सोई ॥
ततु पछाणै सो पंडितु होई ॥
आपि तरै सगले कुल तारै हरि नामु मंनि वसावणिआ ॥ (पन्ना १२८)

ऐसे सर्वव्यापी, सर्वगुण, सर्वशक्ति के मालिक प्रभु ने बेअंत रचना रचकर सबको आश्चर्यचकित किया हुआ है। इस रचना का आधार वो स्वयं है। इसमें दृश्य एवं अदृश्य रूप में समा कर इसकी सूझ बख़्शने वाला भी वो आप ही है। ऐसे परिपूर्ण परमेश्वर पर गुरु पंचम पातशाह जी बारंबार कुर्बान जाते हैं। चौथे पातशह भी उस मालिक के ऐसे स्वरूप पर कुर्बान जाते हैं :

वारी मेरे गोविंदा वारी मेरे पिआरिआ हउ तुधु विटड़िअहु सद वारी जीउ ॥ (पन्ना १७४)

वह सब शरीरों में व्याप्त होकर आनंद-स्वरूप एवं आनंद को भोगने वाला भी है :

चोजी मेरे गोविंदा चोजी मेरे पिआरिआ हरि प्रभु मेरा चोजी जीउ ॥ . . .
हरि आपे सभ घट भोगदा मेरे गोविंदा आपे रसीआ भोगी जीउ ॥ (पन्ना १७४)

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष साहिबान : २६

जत्थेदार अवतार सिंघ

*-स. रूप सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब विश्व यूनीवर्सिटी, फ़तहिगढ़ साहिब के प्रथम चांसलर, सदस्य कोर कमेटी शिरोमणि अकाली दल, पंजाबी, अंग्रेजी तथा हिंदी भाषाओं के ज्ञाता, कीर्तन-प्रेमी, गुरमुख, दर्शनी शख़्सियत, हंसमुख, मिलनसार स्वभाव के मालिक, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर के अध्यक्ष पद पर निरंतर पांचवी बार सुशोभित होने वाली शख़्सियत जत्थेदार अवतार सिंघ का जन्म ३ जनवरी, १९४३ ई को स. हरबंस सिंघ तथा माता किशन कौर के घर सरगोधा (पाकिस्तान) में हुआ। देश-विभाजन के उपरांत इनका परिवार पहले मुस्तफाबाद, फिर रुड़की तथा आखिर में जगराउं में आबाद हुआ। गुरसिक्खी जीवन-जाच की शिक्षा में इनके पारिवारिक वातावरण ने बहुमूल्य योगदान डाला। ये प्राइमरी विद्या की प्राप्ति के उपरांत उच्च शिक्षा के लिए खालसा नेशनल हाई स्कूल, लुधियाना में दाख़िल हुए। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा ली जाती धार्मिक परीक्षा में स्कूल की पढ़ाई के समय आप जी ने वजीफ़ा प्राप्त किया। एफ़. एस. सी. (नॉन-मेडिकल) गुज्जरांवाला गुरु नानक खालसा कॉलेज, लुधियाना से करने के उपरांत इनको भारतीय जीवन बीमा निगम में सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा १९७० ई में उच्च पदवी से सेवा-मुक्त हुए। इनका अनंद कारज बीबी महिंदर कौर के साथ १९६१ ई में लुधियाना में हुआ। इनके घर तीन सुपुत्रों एवं एक सुपुत्री ने जन्म लिया जो अपने-अपने व्यवसायों में मशरूफ हैं। बचपन से ही धार्मिक रुचि तथा सिक्ख विचारधारा की सूझ एवं समझ होने के कारण आप धार्मिक कार्यों को समर्पित भावना से करते हैं। इन्होंने १९७९ ई से १९८८ ई तक गुरुद्वारा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब, मिलरगंज, लुधियाना के मुख्य सेवादार के रूप में सेवा निभाई। गुरुद्वारा सिंघ सभा, मॉडल टाऊन एक्सटेंशन, लुधियाना का निर्माण-कार्य इन्होंने १९८५ ई में करवाया, अब जिसका आदर्श प्रबंध एक मिसाल है। जत्थेदार अवतार सिंघ लगभग ३० वर्ष से गुरुद्वारा प्रबंध तथा सेवा के साथ निरंतर जुड़े हुए हैं। गुरु-घर की सेवा के अतिरिक्त इन्होंने गुरु नानक मार्किट, लुधियाना का निर्माण-कार्य करवाया तथा गुरमति ज्ञान एवं विद्या के प्रसार के लिए १९९९ ई में खालसा पंथ के ३०० वर्षीय सृजना दिवस के समय श्री गुरु गोबिंद सिंघ पब्लिक स्कूल की आरंभता की, जो विकास कर सीनियर सेकंडरी स्कूल के रूप में नाम कमा रहा है।

जत्थेदार अवतार सिंघ धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक गतिविधियों की लगन का सदका सदैव शिरोमणि अकाली दल के वफ़ादार सिपाही की तरह विचरते हैं। पंथक सेवाओं में उत्सुकता से हिस्सा लेने के कारण कई बार इनको जेल-यात्रा भी करनी पड़ी परंतु इन्होंने पंथक सेवा से कभी मुंह नहीं फेरा। इन्होंने शिरोमणि अकाली दल के एक साधारण सदस्य के रूप में सेवा आरंभ कर उपाध्यक्ष, शिरोमणि अकाली दल की पदवी का सफ़र सफलतापूर्वक सम्पूर्ण किया।

**सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००६; मो. ९८१४६-३७९७९*

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी का आम चुनाव २००४ ई में हुआ तो जत्थेदार अवतार सिंघ लुधियाना के पश्चिमी क्षेत्र से पंथक टिकट पर सदस्य, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी चुने गए। एक वर्ष के बाद २३ अक्तूबर, २००५ ई का दिन इनकी ज़िंदगी का ऐतिहासिक दिन बन गया, जब इनको पहली बार सर्वसम्मति से शिरोमणि सिक्ख संस्था शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर का अध्यक्ष चुने जाने का सम्मान प्राप्त हुआ। मात्र एक साल सदस्य शिरोमणि गु. प्र. कमेटी रहने के उपरांत शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष पद पर विराजमान होना जत्थेदार अवतार सिंघ पर श्री गुरु रामदास जी की बख़्शिश ही कही जा सकती है। गुरु-दर-घर की कृपा सदका तब से लेकर आज तक जत्थेदार अवतार सिंघ अध्यक्ष-पद पर विराजमान हैं। जत्थेदार अवतार सिंघ स्वीकार करते हैं कि मुझे यह पदवी गुरु-बख़्शिश तथा शिरोमणि अकाली दल के प्रति वफ़ादारी एवं समर्पण-भावना के कारण प्राप्त हुई है तथा वाहिगुरु ही मुझसे पंथक सेवा सफलता से करवा रहा है।

जत्थेदार अवतार सिंघ को कीर्तन-परंपरा तथा मर्यादा की पूर्ण समझ है। उन्होंने अध्यक्ष-पद संभालते ही श्री हरिमंदर साहिब में पुरातन कीर्तन परंपरा को बहाल करने के लिए तंती साज़ों से कीर्तन करना आरंभ करवाया। नशे, पतितता तथा मादा-भ्रूण-हत्या आदि सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध तथा प्राकृतिक वातावरण को बचाने के लिए लहर आरंभ की। 'अमृत छको' लहर चलाकर प्रत्येक प्रांत में अमृत-संचार समागम करवाए। अकेले जम्मू-कश्मीर में ही ३० हज़ार से अधिक प्राणियों को अमृत-पान करवाया।

सिक्ख धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु जत्थेदार अवतार सिंघ ने जितना देश-विदेश में सफर किया है, वो भी एक कीर्तिमान है। शारीरिक स्वास्थ्य ठीक न होने के बावजूद भी वे प्रत्येक धार्मिक समागम में पहुंचने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। इनके उद्यम-उत्साह का सदका देश के अलग-अलग राज्यों में सिक्ख मिशन जम्मू, सिक्ख मिशन दिल्ली, सिक्ख मिशन हैदराबाद, सिक्ख मिशन काशीपुर (उत्तराखंड), सिक्ख मिशन रायपुर (छत्तीसगढ़), सिक्ख मिशन श्री गंगानगर (राजस्थान), सिक्ख मिशन (गुरुद्वारा पलाह साहिब) हिमाचल प्रदेश, सिक्ख मिशन इंदौर (मध्य प्रदेश) आदि स्थापित हुए। धर्म प्रचार लहर तथा सिक्ख विरसा संभाल मुहिम आरंभ की गई जो सफलतापूर्वक चल रही है। अमृत-संचार समारोह, नगर कीर्तन, ढाडी दरबार, पाठ बोध समागम, रागों पर आधारित कीर्तन दरबार, मेडिकल कैंप, विद्यार्थी कैंप, ग्रंथी तथा पाठी सिंघों के कैंप लगाकर नया कीर्तिमान स्थापित किया।

जत्थेदार अवतार सिंघ खुशकिस्मत हैं कि उनको गुरु-पंथ से सम्बंधित शताब्दियां जैसे कि श्री गुरु अरजन देव जी की चौथी शहीदी शताब्दी, श्री अकाल तख़्त साहिब के सृजना दिवस की चौथी शताब्दी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के सम्पूर्णता दिवस तीसरी शताब्दी, बाबा बुड्ढा जी की पांचवी जन्म शताब्दी, श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की तीसरी गुरुतागद्दी शताब्दी, बाबा बंदा सिंघ बहादुर द्वारा सरहिंद फ़तहि करने का ३०० वर्षीय दिवस मनाने का सौभाग्य मिला। शहीद बाबा दीप सिंघ निवास, प्रबंधकीय ब्लॉक तथा एन. आर. आई. निवास के निर्माण-कार्य के अलावा अनेकों स्कूलों, कॉलेजों का उद्घाटन करने का सौभाग्य भी जत्थेदार अवतार सिंघ को प्राप्त हुआ। इन्होंने भारत सरकार, अलग-अलग देशों के दूतावासों तथा यू. एन. ओ. तक पत्र लिखकर उन्हें सिक्ख समस्याओं

से अवगत करवाया।

आप जी ने शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा पहले आरंभ किए कार्यों को सम्पूर्ण करवाया तथा गुरमति-ज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु नये सिक्ख मिशन अलग-अलग राज्यों में स्थापित किए। द्वि-वर्षीय सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स, धर्म प्रचार लहर, श्री गुरु ग्रंथ साहिब विश्व यूनीवर्सिटी की आरंभता, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड का आधुनिकीकरण, गुरमति साहित्य की छपाई के लिए गोल्डन ऑफसेट प्रेस का विस्तार एवं नयी करोड़ों रुपयों वाली आधुनिक मशीन, विरासती इमारतों का रखरखाव, श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन-स्नान के लिए आई संगत के लिए निवास तथा सुविधाएं, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रबंधकीय ब्लॉक का निर्माण, हिसाब-किताब को पारदर्शी करना, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के ऑडिट को सम्पूर्ण करवाना, श्री हरिमंदर साहिब तथा शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए टच-स्क्रीन कंप्यूटर लगवाने जैसे ऐतिहासिक महत्ता वाले सारे कार्य जत्थेदार अवतार सिंघ ने करवाए।

१० मार्च, १९४५ ई. को हुई सामान्य एकत्रता के समय पहली बार सिक्ख यूनीवर्सिटी की ज़रूरत पर प्रस्ताव पारित किया गया था। जत्थेदार अवतार सिंघ को मान-प्रतिष्ठा हासिल है कि वे पहले हुए प्रस्तावों को अमल में लाने में कामयाब हुए। पहली सितंबर, २००८ ई. को स. परकाश सिंघ बादल, मुख्यमंत्री, पंजाब एवं जत्थेदार अवतार सिंघ को श्री गुरु ग्रंथ साहिब विश्व यूनीवर्सिटी का शिलान्यास करने का मान-सम्मान हासिल हुआ। आप जी को ८०० वर्ष पुरानी विश्व-प्रसिद्ध कैंब्रिज़ यूनीवर्सिटी, लंदन के साथ २१ जुलाई, २००९ ई. को समझौता करने का भी सम्मान प्राप्त हुआ, जिसमें प्रत्येक वर्ष पांच सिक्ख विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा छात्रवृत्ति दी जाती है। श्री गुरु रामदास इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसज़ एंड रीसर्च, श्री अमृतसर को योग्य बनाने में जत्थेदार अवतार सिंघ अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने विशेष रुचि ली। इनके प्रयत्नों का सदका एम. बी. बी. एस. के विद्यार्थियों की सीटें ५० से बढ़कर १०० तथा पी. जी. के विद्यार्थियों की सीटों की संख्या ९ से ४३ हो गई है। अल्पसंख्यक कोटे की बहाली भी इनके समय में ही हुई। सम्मान सहित श्री गुरु ग्रंथ साहिब की छपाई की एकसारता तथा एकसुरता को बनाए रखने तथा सम्मानित पावन स्वरूपों के व्यापारीकरण को रोकने के लिए जत्थेदार अवतार सिंघ के प्रयत्नों का सदका पंजाब सरकार ने कानून पास किया कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पावन स्वरूप शिरोमणि गु. प्र. कमेटी श्री अमृतसर की प्रवानगी के बिना कोई भी प्रकाशित नहीं कर सकेगा।

केंद्रीय सिक्ख संग्रहालय में २०वीं शताब्दी के महान सिक्ख प्रचारक शहीद बाबा जरनैल सिंघ भिंडरांवाले की तसवीर सुशोभित करने का सौभाग्य भी जत्थेदार अवतार सिंघ को ही प्राप्त हुआ। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सर्वप्रवानित टीका तैयार करने के लिए नये खोज-केंद्र की स्थापना की गई। गुरमति विचारधारा के प्रचार-प्रसार के लिए सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स का निदेशालय स्थापित किया जो सफलता की बुलंदियों को छू रहा है। इनके द्वारा सिक्ख शैक्षणिक संस्थाओं को समय के बराबर का बनाने हेतु डायरेक्टोरेट ऑफ एजूकेशन बनाया गया।

अध्यक्ष साहिब के सार्थक प्रयत्नों का सदका ही ऐतिहासिक सिक्ख इमारतों एवं विरासत

को संभालने के लिए विशेषज्ञों से संपर्क स्थापित करके विरासती इमारतों को हू-ब-हू संभालने का कार्य आरंभ किया गया, जिसके तहत दर्शनी ड्योढ़ी श्री हरिमंदर साहिब, बुंगा रामगढ़िया, गुरुद्वारा बाबा अटल राय जी, बारांदरी आदि की संभाल की जा रही है। दीवान टोडर मल की ऐतिहासिक जहाज़ हवेली शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रबंध अधीन ली गई है, जिसको संभाला जाएगा। वातावरण में आ रहा बदलाव समूची मानवता के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। वातावरण के समतोल को बनाए रखने में वृक्ष सबसे ज्यादा सहायक हैं। इनकी योग्य अगुआई में शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने इस कार्य में बहुमूल्य योगदान डाला एवं डाल रही है।

अध्यक्ष साहिब के निर्देशों पर सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड का नवीनीकरण किया गया। पुरातन बहुमूल्य साहित्य को संभालने के लिए फ्यूमीग्रेशन चैंबर स्थापित किया गया तथा हस्तलिखित पावन स्वरूपों एवं दुर्लभ ग्रंथों की संभाल के लिए डिजीटलाईजेशन करवाई जा रही है। श्री हरिमंदर साहिब तथा अन्य ऐतिहासिक स्थानों के दर्शन-स्नान हेतु आई संगत की सुविधा के लिए रेलवे स्टेशन, एयर-पोर्ट तथा बस स्टैंड से फ्री बस सेवाओं में बढ़ोतरी की गई तथा नज़दीकी ऐतिहासिक स्थानों के दर्शन हेतु दो बसों की नि:शुल्क सेवा आरंभ की गई । नामवर सिक्ख शख़्सियतों एवं विद्वानों, जैसे भाई जसबीर सिंघ खन्ने वाले को 'पंथ-रत्न' की उपाधि; डॉ. रघबीर सिंघ (बैंस), प्रसिद्ध कानूनदान, (दिवंगत) स. हरदेव सिंघ मत्तेवाल, मिसल शहीदां तरना दल के मुखिया बाबा निहाल सिंघ, पदम श्री भाई निरमल सिंघ खालसा, बीबी जसबीर कौर खालसा, प्रिं. करतार सिंघ, स. पवित सिंघ आदि का विशेष सम्मान एवं सत्कार करने का सौभाग्य भी जत्थेदार अवतार सिंघ को प्राप्त हुआ। जत्थेदार जी ने जून, १९८४ में श्री दरबार साहिब तथा अन्य धार्मिक स्थानों पर घटित घल्लूघारे के समय धर्मी फौजियों (जिन्होंने बैरिकें छोड़ीं) को सेवा एवं सहायता देने में खुलदिली दिखलाई। इन्होंने जोधपुर के नज़रबंदियों की भी हर संभव सहायता की।

सिक्ख कत्लेआम के दोषी सज्जन कुमार तथा जगदीश टाईटलर, तथाकथित डेरा सच्चा सौदा ,मालवा क्षेत्र के हरिमंदर (मसतूआणा), प्रो. दरशन सिंघ, नानकशाही कैलंडर, भक्त रविदास जी के पैरोकारों, आशुतोष के शिष्य आदि मामलों को सुलझाने में भी आप काफी प्रयत्नशील रहे। विश्वव्यापी सिक्ख भाईचारे से सम्बंधित समस्याओं, जैसे सिक्खों की दसतार, केस, कृपाण तथा पतितता, कन्या-भ्रूण-हत्या, हरियाणा की अलग गु. प्र. कमेटी के मामले के विरुद्ध विशेष रूप से लहर चलाई तथा विदेशी दूतघरों का घेराव तक खुद किया।

जत्थेदार अवतार सिंघ को देश के अलग-अलग क्षेत्रों में प्रचार-यात्रा करने के अतिरिक्त अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड एवं पाकिस्तान आदि देशों में जाने का अवसर भी प्राप्त हुआ। हउमै-अहंकार से रहित, साफ दिल, मिलनसार, श्रद्धा-भावना से भरपूर आप जी को धार्मिक मामलों की सूक्ष्म सूझ एवं समझ है। आप जी पंथ के लिए बहुत कुछ करना चाहते हैं परंतु कई बार समय एवं समकालीन समस्याओं के समक्ष बेबस भी नज़र आते हैं। आजकल जत्थेदार अवतार सिंघ ४०७-ए, मॉडल टाऊन एक्सटेंशन, लुधियाना में अपने बच्चों सहित निवास रख रहे हैं। परमात्मा करे, ये स्वस्थ रहें और कौम की निरंतर सेवा करते रहें। ☸

ख़बरनामा

खालसा कॉलेज पटियाला की छात्रा बीबा तृषा देव ने कांसे के तमगे जीते

श्री अमृतसर : २७ सितंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रबंध वाले खालसा कॉलेज पटियाला की बीबा तृषा देव एम. ए भाग प्रथम (अंग्रेजी) की काबिल छात्रा है, ने सिउल खेलों में तीरंदाज़ी में कांसे के तमगे जीतकर अपना, अपने माता-पिता, कॉलेज एवं शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का नाम रौशन किया है।

जत्थेदार अवतार सिंघ अध्यक्ष शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने कहा कि बीबा तृषा देव ने खेलों में अच्छा प्रदर्शन करते हुए कांसे के तमगे जीते हैं जो संस्था के लिए गर्व वाली बात है। उन्होंने कहा कि बीबा तृषा देव को विशेष रूप से भी सम्मातिन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा बच्चों के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए प्रत्येक वर्ष अपने प्रबंध वाले स्कूलों एवं कॉलेजों में खालसाई खेल मुकाबले करवाए जाते हैं। जो बच्चे खेलों में बढ़िया प्रदर्शन करते हैं उनको सम्मानित किया जाता है।

खालसा कॉलेज, पटियाला के प्रिंसीपल स. धरमिंदर सिंघ ने भी खेलों में बीबा तृषा देव द्वारा कांसे के तमगे जीतने पर खुशी का इज़हार करते हुए उनको बधाई दी है। उन्होंने बताया कि बीबा तृषा देव का कॉलेज द्वारा भी सम्मान किया जाएगा। उन्होंने बताया कि बीबा तृषा देव ने कॉलेज एवं शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का नाम रौशन किया है। इससे अन्य बच्चे भी खेलों की ओर उत्साहित होंगे।

बेस्ट इंटरनेशनल स्कॉलर अवार्ड प्राप्त बीबी जसवीर कौर सम्मानित

श्री अमृतसर : २ अक्तूबर : बेस्ट इंटरनेशनल स्कॉलर अवार्ड प्राप्त बीबी जसवीर कौर को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने केंद्रीय सिक्ख संग्रहालय की तैयार की गई एलबम एवं सिरोपा देकर सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि वुलवर हैमटन यू. के. द्वारा बीबी जसवीर कौर को रोल मॉडल ऑफ हायर एजूकेशन के अवार्ड से सम्मानित किया जाना सिक्खों के लिए गर्व की बात है तथा विदेश में पढ़ाई करते हुए पूर्ण रूप से गुरसिक्ख सजना नौजवान पीढ़ी के लिए प्रेरणा भी है।

सन् २०१४ की धार्मिक परीक्षा की समय-सारिणी जारी

श्री अमृतसर : ३ अक्तूबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा सन् २०१४ में ली जाने वाली धार्मिक परीक्षा की समय-सारिणी जारी करते हुए सचिव स. सतबीर सिंघ ने बताया कि स्कूलों के विद्यार्थियों (प्रथम व द्वितीय दर्जा) की धार्मिक परीक्षा १८ व १९ नवंबर, २०१४ को ली जाएगी तथा कॉलेजों (तृतीय व चतुर्थ दर्जा) के विद्यार्थियों की परीक्षा जनवरी, २०१५ में ली जाएगी।

उन्होंने बताया कि १८ नवंबर, २०१४ को गुरबाणी एवं गुरु इतिहास की परीक्षा होगी तथा १९ नवंबर, २०१४ को सिक्ख इतिहास एवं

सिक्ख रहित मर्यादा की परीक्षा होगी। परीक्षा का समय सुबह १० बजे से १ बजे तक होगा। उन्होंने बताया कि परीक्षा केंद्र एवं विद्यार्थियों के अनुक्रमांक की सूचना परीक्षा में भाग ले रहे विद्यार्थियों के स्कूलों को भेजी जा रही है। यदि समय पर किसी स्कूल को यह सूचना न मिले तो वो कार्यालय के फोन नंबर 0183-2553956,57,58--एक्सटेंशन 305 या प्रभारी स. गुरिंदरपाल सिंघ के साथ 9814898263 पर संपर्क किया जा सकता है।

धर्म-युद्ध कला 'गतका' को स्टंटबाज़ी न बनाया जाए- सतबीर सिंघ

श्री अमृतसर : ३ अक्तूबर : गतका सिक्खों की धर्म-युद्ध कला है। इसको खेलने में किसी किस्म की मर्यादा के विरुद्ध जाने की अनुमति नहीं दी जा सकती। इन विचारों का प्रकटीकरण स. सतबीर सिंघ सचिव धर्म प्रचार कमेटी ने किया।

उन्होंने बताया कि गतका निरोल रूप से धर्म-युद्ध कला है किंतु आजकल कुछ अनजान लोगों ने इसको खेलते समय स्टंटबाज़ी करनी शुरू कर दी है। यह किसी भी तरह गतके का हिस्सा नहीं है। इसमें पतित व्यक्ति भी भाग नहीं ले सकता। इस सम्बंधी श्री अकाल तख़्त साहिब से २२ नवंबर, २०१२ को हुकमनामा भी जारी हो चुका है। उन्होंने समूह गतका पार्टियों को अपील की है कि गतका खेलते समय पूर्ण मर्यादा का ख़्याल रखा जाए तथा गुरु साहिबान द्वारा बख़्शी युद्ध-कला का ही प्रदर्शन किया जाए।

भारतीय हॉकी टीम को जत्थेदार अवतार सिंघ द्वारा बधाई

श्री अमृतसर : ४ अक्तूबर : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने दक्षिण कोरिया के शहर इंचीओन में हुए एशियाई खेलों में भारतीय हॉकी खिलाड़ियों द्वारा स्वर्ण पदक जीतने पर उनको बधाई दी है। भारतीय हॉकी टीम में शामिल खिलाड़ियों-- स. अकाशदीप सिंघ, स. रुपिंदर सिंघ व स. धरमवीर सिंघ को पनालटी शूट आऊट मुकाबले में शानदार प्रदर्शन करने पर विशेष रूप से बधाई देते हुए जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि इन सिक्ख खिलाड़ियों के हॉकी में अच्छे प्रदर्शन का सदका ही भारत का नाम पूरी दुनिया में रौशन हुआ है। उन्होंने कहा कि सिक्खों की सिरमौर जत्थेबंदी शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा भी हॉकी के लिए सिक्खी स्वरूप वाले खिलाड़ियों को उत्साहित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि साबत सूरत वाले सिक्ख खिलाड़ियों के लिए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा फरीदकोट, फ़तहिगढ़ साहिब तथा श्री अमृतसर साहिब में अकादमियां खोली गई हैं, जिनमें हॉकी में दिलचस्पी रखने वाले खिलाड़ियों को मुफ्त विद्या के साथ-साथ हॉकी की मुफ्त ट्रेनिंग, हॉकी के खेल का सामान, संतुलित भोजन एवं रिहायश जैसी सुविधाएं दी जा रही हैं। मुकाबले में अव्वल आने वाले खिलाड़ियों को समय-समय पर सम्मानित भी किया जाता है।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-११-२०१४